• वर्ष ६६ • अंक १७ • मूल्य ₹ २०

सितम्बर (प्रथम) २०२४

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

स्वतन्त्रता के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के पुरोधा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अजमेर के संग्रहालय में बनेगी महर्षि दयानन्द सरस्वती की गैलरी

अजमेर के राजकीय संग्रहालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती की गैलरी बनवाने की घोषणा का परोपकारिणी सभा ने आर्य समाज की ओर से इसका स्वागत किया है। संस्था के पदाधिकारियों ने कहा कि इससे यहां आने वाले लोग महर्षि के जीवन से प्रेरणा ले सकेंगे।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से हाल ही में सभा का शिष्टमंडल मिला था। इस दौरान महर्षि दयानन्द से जुड़े स्थलों के विकास सहित अन्य कई सुझाव भी उन्हें दिए थे। इसके बाद ही उन्होंने यह घोषणा की है। उनका कहना था कि अभी अजमेर के राजकीय संग्रहालय में महाराणा प्रताप के जीवन की विस्तृत जानकारी दी गई है, लेकिन अब स्वामी दयानन्द और पृथ्वीराज चौहान आदि महापुरुषों के जीवन के बारे में भी जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी। इन सभी महापुरुषों की गैलरी बनाई जाएंगी। परोपकारिणी सभा के प्रधान ओम्मुनि और मंत्री श्री कन्हैयालाल आर्य ने इस घोषणा का स्वागत किया है। उन्होंने इसके लिए देवनानी का आभार जताया। श्री ओम् मुनि ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण अजमेर में हुआ था। उनकी द्वि जन्म शताब्दी पर यह घोषणा हर्ष का विषय है।

सभा ने जताया आभार

राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी
को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते सभा प्रधान
श्री ओम्मुनि एवं न्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती।

पं. जियालाल जयन्ती पर आयोजित प्रतियोगिता के विजेता पुरस्कृत

आर्य समाज अजमेर की ओर से श्रावणी उपाकर्म एवं कर्मवीर पंडित जियालाल जयन्ती के अवसर पर छात्र छात्राओं की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओम्मुनि, वैदिक विद्वान् पंडित रामस्वरूप रक्षक और आर्य समाज के प्रधान श्री नवीन मिश्र विजेताओं के साथ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

वर्ष : ६६ **अंक** : १७

दयानन्दाब्द: २००

विक्रम संवत् - भाद्रपद कृष्ण २०८१

कलि संवत् - ५१२५

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२५

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

मुद्रक- डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
८२०९५८६१६६

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.
पाँच वर्ष-१५०० रु.
आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.
एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर प्रथम, २०२४

अनुक्रम

०१. गफ़लत का आदी-हिन्दू	सम्पादकीय	०४
०२. दोषों को भूनने में समर्थ प्राणविद्या	प्रो. नरेश कुमार धीमान्	०५
* आचार्य की आवश्यकता		११
* प्रवेश सूचना		११
०३. महर्षि दयानन्द जी से इतनी चिढ़...	प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१२
०४. दयानन्दी षड्यन्त्र या दयानन्द-१	धर्मेन्द्र जिज्ञासु	१५
०५. संस्कृत में भारत और भारत में...	डॉ. आशुतोष पारीक	२२
०६. दुकान (स्टॉल) आवंटन		२४
०७. ज्ञान सूक्त-१७	डॉ. धर्मवीर	२५
०८. निवेदन		२७
०९. भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला समारोह		२८
१०.संस्था की ओर से....		३०
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३३
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

गफ़लत का आदी-हिन्दू

हजारों वर्षों का इतिहास साक्षी है कि हिन्दू ने अपनी भूलों से कोई सबक नहीं सीखा है। आठवीं सदी के प्रारम्भ (७११ई.) में मुहम्मद बिन कासिम के सिन्ध पर हुए आक्रमण के फलस्वरूप अपार जन-धन की हानि के साथ अस्मिता पर हुए आघात के बाद भी इसकी चाल वही है।

धर्म के नाम पर अहिंसा और सहिष्णुता शब्दों को इस प्रकार पकड़ लिया है कि स्वकीय अपमान के साथ ही धार्मिक प्रतीकों को धवस्त किया जाना भी सह्य है। यदि कोई इसके प्रतीकार की बात करे, तो उसे साम्प्रदायिक सोच का सिद्ध करने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया जाए। इसका परिणाम यह कि वह स्वयं तो विचार करे ही कि मैंने ऐसा क्या कह और कर दिया, जो हिन्दू धर्म के मूल सिद्धान्तों के विपरीत है? साथ ही दूसरे भी इस प्रकार की प्रतिक्रिया से पूर्व सौ बार विचार करें कि कहूं या नहीं?

विगत दिनों संसद में जिस प्रकार हिन्दू-हिन्दुत्व को परिभाषित किया गया क्या वह सत्य के आस-पास भी था? यदि नहीं, तो इसके प्रतीकार में कितने सदस्य थे? हिन्दू को साम्प्रदायिक-हिंसक कहने वाले और उनके समर्थक भी तथाकथित हिन्दू ही तो थे। किन्तु-

अभी अगस्त के प्रथम सप्ताह में पड़ौसी बांग्ला देश में जो सत्ता का तख्ता पलट हुआ, वहां की प्रधानमन्त्री को देश छोड़कर भागना पड़ा, इसे तो उस देश का आन्तरिक मामला कहा जा सकता है। शेख हसीना के ढाका छोड़ने के पश्चात् उग्र असामाजिक (की अपेक्षा धार्मिक उन्मादी कहना उचित होगा) आन्दोलनकारियों ने जिस प्रकार वहां के अल्पसंख्यक विशेषत: हिन्दुओं को निशाना बनाया, घरों एवं प्रतिष्ठानों को आग के हवाले कर दिया और हिन्दू महिलाओं, युवतियों के साथ जो अमानवीय व्यवहार किया गया, वह समाचार-पत्रों एवं सोशल मीडिया पर देखा जा सकता है।

आन्दोलनकारियों/धार्मिक उन्मादियों द्वारा हिन्दुओं को निशाना बनाने का प्रमुख कारण उनकी धार्मिक पहचान को समाप्त करना है। इनके (हिन्दू) लिए दो ही विकल्प हैं-

१. इस्लाम स्वीकार करना

२. उन्मादियों के हाथों मरना

बांग्लादेश में रहने वाले हिन्दू क्या वहां के मूल निवासी नहीं हैं? उनके पूर्वज क्या उसी भूमि के नहीं थे? यदि विभाजन के समय इनके पूर्वजों ने अपनी मातृभूमि पर रहना स्वीकार किया था, तो इसमें अपराध क्या है? क्या इन्होंने कभी राष्ट्रद्रोह किया है? यदि नहीं, तो फिर ये सम्मानपूर्वक अपनी धार्मिक पहचान बनाए रखते हुए इस दुर्व्यवहार के पात्र क्यों हैं? क्या केवल इसलिए कि-इनकी उपासना पद्धति इस्लाम के अनुकूल नहीं है?

अमेरिकी समाजशास्त्री रिचर्ड बैंकिग की पुस्तक '**द मर्डर ऑफ बांग्लादेश हिन्दूज**' का वर्णन आंखें खोलने वाला है। विभाजन के समय सन् १९४७ में वहाँ ३३% हिन्दू आबादी थी। सन् २०२० में यह ८% और अब ७.५% हो गई है। यह जनसंख्या कहां चली गई?

क्या किसी मत पन्थ के अनुयायियों की संख्या में इस प्रकार ह्रास होता, तो विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले उस मत पन्थ वाले इस तरह चुप रहकर यह सब देखते रहते? इसका निश्चित उत्तर है- नहीं।

अबू नज्म जैसे तथाकथित इस्लामी स्कॉलर/प्रचारक हिन्दुओं के प्रति जिस प्रकार के वक्तव्य दे रहे हैं, क्या उसकी कोई शाब्दिक निन्दा भी कर रहा है?

इस सारे घटनाक्रम का सर्वाधिक दु:खद पक्ष है- भारत में बैठे तथाकथित सेक्यूलर (जन्मना हिन्दू) पत्रकारों की यह टिप्पणी कि वह बांग्लादेश के नागरिक हैं। साथ ही हिन्दू को हिंसक कहने वालों की चुप्पी। हिंसक कौन है? किसे हिंसित किया जा रहा है? क्या इसमें धार्मिक पहलू नहीं है? इस पर बोलने से वर्ग विशेष के नाराज होने का खतरा है और वोटर की नाराजगी कौन लेना चाहेगा? जिस दिन हिन्दू अपनी गफलत में रहने की आदत छोड़कर दूसरों की तरह शक्ति प्राप्त कर लेगा, उस दिन से उसके विरुद्ध बोलने अथवा कुछ करने से पूर्व दूसरों को सोचने के लिए विवश होना पड़ेगा। क्या हिन्दू ऐसा कर पायेगा?

- डॉ. वेदपाल

दोषों को भूनने में समर्थ प्राणविद्या

[–प्रो० नरेश कुमार धीमान्, चेयर प्रोफेसर, महर्षि दयानन्द सरस्वती चेयर (यूजीसी),
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)]

यजु० १.१८ का तत्त्वबोध–

१. अग्ने[१] , ब्रह्म[२] , गृभ्णीष्व[३] — परमात्मा अग्नि अर्थात् ज्ञान स्वरूप है। ब्रह्म शब्द यहाँ पवित्र वेदवाणी के लिए प्रयुक्त है। उपासक उसी का बोध पाने और उसे अपने आचरण में लाने की याचना कर रहा है। ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! अपने वेदज्ञान को हमें ग्रहण करवाइए अर्थात् हमारा आचरण वेदानुकूल बन जाए, यह ज्ञान-ग्रहण का तात्पर्य है। वेद का ज्ञान केवल शब्दार्थ परक न होकर हमारे आचरण में उतर कर हमारा रूपान्तरण करने वाला होना चाहिए ॥

२. धरुणम्[४] , असि[५] , अन्तरिक्षम्[६] ,

---

१. अगि गतौ (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः, 'इदितो नुम् धातोः' (अष्टा० ७.१.५८) इति नुमागमः, 'अङ्गेर्नलोपश्चलाः' (उ० ४.५०) इति नि-प्रत्ययः, नलोपश्च, प्रत्यय-स्वरेणान्तोदात्तः–अग्नि। सम्बोधने प्रथमैकवचने सु-प्रत्ययः, 'सामन्त्रितम्, एकवचनं सम्बुद्धिः' (अष्टा० २.४८-४९), 'ह्रस्वस्य गुणः' (अष्टा० ७.३.१०८) इति गुणादेशः, 'एङ्-ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' (अष्टा० ६.१.६९) इति सुलोपः, पादादौ, आमन्त्रितसंज्ञकत्वात् 'आमन्त्रितस्य च' (अष्टा० ६.१.१९८) इत्याद्युदात्तः, तदुत्तरस्य स्वरितश्च–अग्ने॥

२. बृंह वृद्धौ (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'बृंहेर्नोऽच्च' (उणा० ४.१४७) इति मनिन्-प्रत्ययः, नकारस्य अदादेशश्च– बृ + अ + ह् +मनिन्। 'इको यणचि' (अष्टा० ६.१.७७) इति यणादेशः– ब्रह्मन् । 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– 'ब्रह्मन्'। नपुंसके द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः। 'स्वमोर्नपुंसकात्' (अष्टा० ७.१.२३) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'ब्रह्म'॥

३. ग्रह उपादाने (क्र्यादिगणः उभयपदी) इति धातोरात्मनेपदे लोटि मध्यमपुरुषैकवचने, 'क्र्यादिभ्यः श्ना' (अष्टा० ३.१.८१) – ग्रह् + श्ना + थास्। 'थासस्से' (अष्टा० ३.४.८०) इति थासः से-आदेशः– ग्रह् + ना + से। 'सवाभ्यां वामौ' (अष्टा० ३.४.९१) इति सकारस्य वादेशः– ग्रह् + ना + स्व। 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टि-विचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' (अष्टा० ६.१.१६) इति रेफस्य स्थाने ऋकार-सम्प्रसारणे – ग्+ऋ+अ+ह् + ना + स्व। 'सम्प्रसारणाच्च' (अष्टा० ६.१.१०८) इति ऋकार-अकारयोः पूर्वरूपैकादेशः– गृह् + ना + स्व। 'ई हल्यघोः' (अष्टा० ६.४.११३) इति ईकारादेशः– गृह् + नी + स्व। 'आदेशप्रत्यययोः' (अष्टा० ८.३.५९) इति षत्वादेशः– गृह् + नी + ष्व । 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' (अष्टा० ८.४.१) 'रषाभ्याम् णत्वे ऋकारग्रहणम्' (अष्टा० ८.४.१-१) इति वार्तिकेन णत्वम् – गृह्णीष्व॥ श्ना-विकरणमाद्युदात्तम्। अनुदात्तस्य थासः (से–ष्व) 'उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः' (अष्टा० ८.४.६६) इति स्वरितत्वे 'गृह्णीष्व' इति रूपम्। वेदविषये 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि इति हस्य भत्वं वक्तव्यम्'(अष्टा० ८.२.३२ वा०) इति हस्य भः–'गृभ्णीष्व'॥ संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८.१.२८) इति सर्वानुदात्तः – 'गृभ्णीष्व'॥

४. धृञ् धारणे (भ्वादिगणः उभयपदी) इति धातोः 'कृवृदारिभ्य उनन्' (उणादि० ३.५३) इति बाहुलकाद् उनन्-प्रत्ययः, नित्त्वात् 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वे प्राप्ते छन्दसि धरुणशब्दस्य मध्योदात्तदर्शनात् छान्दसत्वात् प्रत्ययस्वरेण मध्योदात्त एव स्वरः – धरुन्। द्वितीयैकवचने–'धरुणम्'॥

दृंह[७] — परमात्मा धरुण अर्थात् लोक-लोकान्तरों को धारण करनेवाला है। समस्त ज्ञान का आधार भी वही परमेश्वर है– "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"[८] अन्तरिक्ष शब्द एक ओर ब्रह्माण्ड के अवकाश में स्थित सूर्य आदि ग्रहों का बोधक है तो दूसरी ओर हमारे अन्तरात्मा में विद्यमान विविध ज्ञान-विज्ञान का बोधक है। दोनों में दृढ़ता हो, स्थिरता हो। सूर्यादि ग्रहों का अपनी-अपनी परिधि में संचरण करना ही उनका सुदृढ़ होना है और बार-बार के अभ्यास से प्राप्त ज्ञान का स्मृति और आचरण में बने रहना ही उसकी स्थिरता या दृढ़ता है। इसकी प्रार्थना उसी से करना उचित है जो इनका स्वामी हो। इसीलिए इनकी दृढ़ता की प्रार्थना से पहले 'धरुणम् असि' वाक्य के द्वारा परमेश्वर के तदनुकूल वैशिष्ट्य को बताया गया है॥

३. ब्रह्मवनिं[९], त्वा[१०], क्षत्रवनिं[११],

५. अस् भुवि (अदादिगणः, परस्मैपदी) इति धातोर्लटि मध्यमपुरुषैकवचने सिप्-प्रत्ययः – अस् + सिप्। 'कर्तरि शप्' (अष्टा० ३.१.६८) इति शप्, तस्य च 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' (अष्टा० २.४.७२) इति लुक् – अस् + सि। 'तासस्त्योर्लोपः' (अष्टा० ७.४.५०) इत्यस्-धातोः सकारस्य लोपः – असि। सिपः पित्त्वात् सिप्-प्रत्ययोऽनुदात्तः, अतः धातुस्वरेणैवाद्युदात्तत्वम्, ततः स्वरितत्वं च – असि। संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८.१.२८) इति सर्वानुदात्तत्वम् –'असि' ॥

६. अन्तः मध्ये ऋक्षाणि नक्षत्राणि यस्य तत् अन्तरिक्षम्। अन्तः द्यावापृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यत इति वाऽन्तरिक्षम्। "अन्तरिक्षं कस्मादन्तरा क्षान्तं भवति, अन्तरेमे इति वा, शरीरेष्वन्तरक्षयमिति वा॥" (निरु० २.१०) इति निरुक्तव्युत्पत्त्या पृषोदरादित्वाद् ऋकारस्येकारः, 'बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्' (अष्टा० ६.२.१) इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरः। अन्तर्-शब्द उञ्छादित्वादन्तोदात्तः, नपुंसकद्वितीयैकवचनम् – अन्तरिक्षम्॥

७. दृहि वृद्धौ (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोर्लोटि मध्यमपुरुषैकवचने सि-प्रत्ययः– दृह् + सि। 'इदितो नुम् धातोः' (अष्टा० ७.१.५८) इति नुमागमः – दृ + नुम् + ह् + सि। 'कर्तरि शप्' (अष्टा० ३.१.६८) इति शप्-प्रत्ययः – दृ+ न् + ह् + शप् + सि। 'सेर्ह्यपिच्च' (अष्टा० ३.४.८७) इति सेर्हि-आदेशः – दृ+ न् + ह् + अ + हि। 'अतो हेः' (अष्टा० ६.४.१०५) इति हेर्लुक् – दृ+ न् + ह् + अ। 'नश्चापदान्तस्य झलि' (अष्टा० ८.३.२४) इति नकारस्यानुस्वारादेशः – दृंह। धातुस्वरेणैवाद्युदात्तस्वरत्वम्, ततः स्वरितश्च – दृंह। संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८.१.२८) इति सर्वानुदात्तः – 'दृंह'॥ छन्दसि रशषसहेषु परतः अनुस्वारस्य ह्रस्वदीर्घौ (ँ, ँ) इत्येतौ चिह्नौ व्यवस्थितौ। दीर्घात् परतः अनुस्वारस्य ह्रस्वचिह्नं (ँ) भवति– यजूँषि (यजु० ३४.५)। यदि संयोगे गुरुत्वं स्यात् तदापि ह्रस्वचिह्नम् (ँ) एव भवति – कृतँ स्मर (यजु० ४०.१५)। अन्यत्र लघोः परतः अनुस्वारस्य दीर्घचिह्नं (ँ) भवति– अघशंसः। तथैवात्रापि – 'दृंह'॥ यथा तु प्रोक्तम्– 'दीर्घात् परो ह्रस्वो ह्रस्वात् परो दीर्घः' प्रतिज्ञापरिशिष्टम्-३.२॥ लघ्वनुस्वारकं बिन्दुं (ँ) जानीयाद् धनुषि स्थितः। स (ँ) एव यदि संयोगे गुरुत्वं तत्र निर्दिशेत्॥ (याज्ञवल्क्यशिक्षाव्याख्याने अमरनाथशास्त्रिणः कारिका-१२) ॥

८. द्र० –आर्य समाज का प्रथम नियम॥

९. बृंह वृद्धौ (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'बृंहेर्नोऽच्च' (उणा० ४.१४७) इति मनिन्-प्रत्ययः, नकारस्य अदादेशश्च– बृ + अ + ह् +मनिन्। 'इको यणचि' (अष्टा० ६.१.७७) इति यणादेशः– ब्रह्मन्। 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– 'ब्रह्मन्'। ब्रह्मणि उपपदे 'वन सम्भक्तौ' (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' (अष्टा० ३.२.२७) इति इन्-प्रत्ययः– ब्रह्म + वन् + इन्। नित्त्वात् 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– ब्रह्मन् + वनिन्। 'समासस्य' (अष्टा० ६.१.२२३) इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते तद्बाधकं 'गतिकारकोपपदात् कृत्' (अष्टा० ६ २.१३९) इत्युत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (आद्युदात्तत्वं) प्राप्तम्, पूर्वपदस्वरस्य च निवृत्तिः – ब्रह्मवनिन्। नपुंसके द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः। 'स्वमोर्नपुंसकात्' (अष्टा०

सजातवनिं[१२], उप[१३], दधामि[१४], भ्रातृव्यस्य[१५], वधाय[१६] — मन्त्रांश में परमेश्वर के लिए तीन विशेषणों का प्रयोग हुआ है — ब्रह्मवनि, क्षत्रवनि तथा सजातवनि। वह ज्ञान के पिपासुओं, अन्याय से पीड़ितों के रक्षक तथा जन्म लेने वाले प्राणीमात्र के प्रति समभाव रखनेवाले मनुष्यों का आत्मिक संबल बढ़ाकर उनको आश्रय देने वाला है। इन तीनों गुणों को धारण करके मनुष्य अपने आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं का दमन करते हुए अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करे तथा आनन्द को प्राप्त करे; यह मन्त्रांश

७.१.२३) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'ब्रह्मवनि'॥ अथवा पुंसि द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः। 'सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाऽऽच्छेयाडाड्यायाजालः' (अष्टा०७.१.३९) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'ब्रह्मवनि'॥

१०. 'त्वाम्' इति स्थाने प्रयुक्तम्, 'त्वामौ द्वितीयायाः' (अष्टा० ८.१.२३), 'अनुदात्तं सर्वमपादादौ' (अष्टा०८.१.१८) इत्यतः सर्वानुदात्तत्वमनुवर्तते– 'त्वा'।

११. क्षद रक्षणे इति सौत्रधातोः 'गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः' (उणा० ४.१६८) इति त्र-प्रत्ययः, प्रत्यय-स्वरेणान्तोदात्तः– 'क्षत्र' प्रातिपदिकः॥ क्षत्रे उपपदे 'वन सम्भक्तौ' (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' (अष्टा० ३.२.२७) इति इन्-प्रत्ययः– क्षत्र + वन् + इन्। नित्त्वात् 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– क्षत्र + वनिन्।'समासस्य' (अष्टा० ६.१.२२३) इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते तद्बाधकं 'गतिकारकोपपदात् कृत्' (अष्टा० ६ २.१३९) इत्युत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (आद्युदात्तत्वं) प्राप्तम्, पूर्वपदस्वरस्य च निवृत्तिः – क्षत्रवनिन्। नपुंसके द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः।'स्वमोर्नपुंसकात्' (अष्टा० ७.१.२३) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'क्षत्रवनि'॥ अथवा पुंसि द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः।'सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाऽऽच्छेयाडाड्यायाजालः' (अष्टा०७.१.३९) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'क्षत्रवनि'॥

१२. जनी प्रादुर्भावे (दिवादिगणः आत्मनेपदी) इति धातोः भावे क्त-प्रत्ययः, प्रत्यय-स्वरेणान्तोदात्तः– जन् + क्त = जात। समानश्चासौ जातश्च सजातः, तं वनतीति सजातवनि। अथवा यथा तु महर्षिः दयानन्दः– जातं जातं वनति स जातवनिः समानश्चासौ जातवनिस्तम्॥ जातोपपदे 'वन सम्भक्तौ' (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' (अष्टा० ३.२.२७) इति इन्-प्रत्ययः– जात + वन् + इन्। नित्त्वात् 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– जात+ वनिन्।'समासस्य' (अष्टा० ६.१.२२३) इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते तद्बाधकं 'गतिकारकोपपदात् कृत्' (अष्टा० ६ २.१३९) इत्युत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (आद्युदात्तत्वं) प्राप्तम्, पूर्वपदस्वरस्य च निवृत्तिः – जातवनिन्। समानश्चासौ जातवनिस्तम्। 'समानस्य छन्दस्यमूर्दप्रभृत्युदर्केषु' (अष्टा०६।३।८४) इति समानस्य सकारादेशे, नपुंसके द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः।'स्वमोर्नपुंसकात्' (अष्टा० ७.१.२३) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– 'सजातवनि'॥ अथवा पुंसि द्वितीयैकवचने अम्-प्रत्ययः। 'सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाऽऽच्छेयाडाड्यायाजालः' (अष्टा०७.१.३९) इति अम्-प्रत्ययस्य लुक्। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टा० ७.१.२३) इति नलोपः– सजातवनि'॥

१३. 'प्रादयः' (अष्टा० १.४.५८), इति निपातसंज्ञा, 'निपाता आद्युदात्ताः' (फिट्० ४.१२) इत्याद्युदात्तत्वम्, यद्वा 'उपसर्गाश्चाभिवर्जम्' इत्यनेनाद्युदात्तत्वम्।

१४. डुधाञ् धारणपोषणयोः (जुहोत्यादिः उभयपदी) इति धातोः लट्लकारे उत्तमपुरुषैकवचने मिप्-प्रत्ययः– धा + मिप्। 'कर्तरि शप्' (अष्टा० ३.१.६८) इति शप्-प्रत्ययः – धा + शप् + मि।'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः' (अष्टा० २.४.७५) इति शपः श्लुः – धा + मि। 'श्लौ' (अष्टा० ६.१.१०) इति धातोर्द्वित्वम्– धा + धा + मि। 'पूर्वोऽभ्यासः'(अष्टा० ६.१.४) इति पूर्वस्याभ्यास-संज्ञा, 'ह्रस्वः' (अष्टा० ७.४.५९) इति अभ्यासस्य ह्रस्वः – ध + धा + मि। 'अभ्यासे चर्च' (अष्टा० ८.४.५४) इति

का निहितार्थ है॥

४. धर्त्रम्[17] , असि, दिवम्[18] , दृंह — जिससे जीवन को धारण करनेवाला प्राणवायु है अथवा जिसके द्वारा यह प्राणवायु धारण कराया जाता है, वह परमेश्वर 'धर्त्रं' कहलाता है। वह परमात्मा अपने सामर्थ्य से जैसे प्रकाशमय सूर्यादि लोकों को स्थिरता प्रदान करता है अर्थात् उन्हें नियमित करता है; वैसे ही वेदज्ञान से प्रकाशित हमारे ज्ञान को भी वह उत्तरोत्तर वृद्धि प्रदान करे, यह कामना है॥

५. ब्रह्मवनि, त्वा, क्षत्रवनि, सजातवनि, उप, दधामि, भ्रातृव्यस्य, वधाय — □परमात्मा के लिए पुनः तीन विशेषणों 'ब्रह्मवनि, क्षत्रवनि तथा सजातवनि' का प्रयोग करते हुए, उपासक अपने आराध्य की इन विशेषताओं को अपने हृदय में धारण करके अपने आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य चाहता है॥

६. विश्वाभ्यः[19] , त्वा, आशाभ्यः[20] , उप, दधामि — उपासक इस मन्त्रांश में सभी दिशाओं में व्यापक परमेश्वर को अपने अंग-संग अनुभव करता हुआ, उसकी उपस्थिति को समर्पण भाव से स्वीकार करता है –'जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है'॥

अभ्यासस्य चर्त्वम् – द + धा + मि । 'अभ्यस्तानामादिः' (अष्टा० ६.१.१८९) इत्याद्युदात्तस्वरत्वम्, ततः क्रमशः स्वरितप्रचयौ – दधामि । संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८.१.२८) इति सर्वानुदात्तः – 'दधामि'॥

१५. भ्राजृ दीप्तौ (भ्वादिः आत्मनेपदी) इति धातोः 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजामातृमातृपितृदुहितृ' (उणा० २.९७) इति तृन्-प्रत्ययान्तः 'भ्रातृ'-शब्दो भ्राजतेर्जलोपे निपातितः, नित्त्वादाद्युदात्तः–'भ्रातृ'। तृच्-प्रत्ययान्तोऽपि तथैव निपातितः, चित्त्वादन्तोदात्तः– 'भ्रातृ'॥ 'भ्रातृ'प्रातिपदिकात् सपत्नार्थे 'व्यन् सपत्ने' (अष्टा० ४.१.१४५) इति सूत्रेण व्यन्-प्रत्ययः, नित्त्वात् 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्याद्युदात्तत्वम्– भ्रातृ+ व्यन् = भ्रातृव्य॥ [भ्रातुरपत्येऽर्थे तु 'भ्रातुर्व्यच्च' (अष्टा० ४.१.१४४) इति सूत्रेण व्यच्-प्रत्ययः, चित्त्वात् 'चितः' (अष्टा० ६.१.१६३) इत्यन्तोदात्तत्वम्– भ्रातृ+ व्यन् = भ्रातृव्य॥] सपत्नार्थकात् 'भ्रातृव्य' प्रातिपदिकात् षष्ठीविभक्त्येकवचने– 'भ्रातृव्यस्य'॥

१६. हन् हिंसागत्योः (अदादिगणः, परस्मैपदी) इति धातोरनुपसर्गे भावेऽप् प्रत्ययः, तत्संनियोगेन च वधादेशः, स चान्तोदात्तः। तत्रोदात्तनिवृत्तिस्वरेणाप उदात्तत्वम्– वध। पुंसि चतुर्थ्येकवचने ङे-प्रत्ययः, स चानुदात्तः– वध + ङे। 'ङेर्यः' (अष्टा० ७.१.१३) इति ङेर्यादेशः – वध + य। 'सुपि च' (अष्टा० ७.३.१०२) इति यञादि सुप्-प्रत्यये परे अदन्तस्य अङ्गस्य दीर्घादेशः, उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितश्च – वधाय॥

१७. धृञ् धारणे (भ्वादिगणः उभयपदी) इति धातोः 'गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः' (उणादि० ४.१६७) इति त्र-प्रत्ययः, गुणादेशः, प्रत्यय-स्वरेणान्तोदात्तः, नपुंसकद्वितीयैकवचनम् – धर्त्रम्॥

१८. दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'क्विप् च' (अष्टा० ३.२.७६) इति क्विप्-प्रत्ययः , क्विपः सर्वापहारिलोपत्वात्, धातुस्वरेणाद्युदात्तत्वम्, ततो द्वितीयैकवचनेऽम्-प्रत्ययः स चानुदात्तः– दिवम्॥

१९. विश प्रवेशने (तुदादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः'अशूप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन्' (उणादि० १.१५१) इति क्वन्-प्रत्ययङ्क, नित्त्वादाद्युदात्तत्वम्– विश्व। ततः स्त्रियां 'अजाद्यतष्टाप्' (अष्टा० ४.१.४) इति टाप्-प्रत्ययः, स च पित्त्वादनुदात्तः, पञ्चमीबहुवचने भ्यस्-प्रत्ययः, विभक्त्यनुदात्तत्वे च स एवाद्युदात्तः स्वरः – विश्वाभ्यः॥

२०. आङ्पूर्वात् 'अशूङ् व्याप्तौ सङ्घाते च' (स्वादिगणः आत्मनेपदी) इति धातोः 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' (अष्टा० ३.१.१३४) इति 'अच्-प्रत्ययः। स्त्रियां 'चितः' (अष्टा० ६.१.१६३) इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते 'वृषादीनां च' (अष्टा० ६.१.१९७) इत्यनेनाद्युदात्तत्वम्। 'अजाद्यतष्टाप्' (अष्टा० ४.१.४) इति टाप्-प्रत्ययः, स च पित्त्वादनुदात्तः, अतो धातुस्वरेणैवाद्युदात्तत्वम्– आशा। यद्वा 'आशाया अदिगाख्या

७. चितः[२१] **, स्थ**[२२] **, ऊर्ध्वचितः**[२३] — मन्त्र के इस अन्तिम भाग में सच्चिदानन्द परमेश्वर जीवात्माओं को उनके अन्दर निहित शक्तियों का बोध कराते हुए उपदेश करते हैं कि तुम उसी चित्-शक्ति से सम्पन्न हो, जो चित्-शक्ति मुझ में है। अपनी इस शक्ति का सदुपयोग करते हुए ऊर्ध्व अर्थात् उत्कृष्ट गुणों का निरन्तर संचय करते रहो और अपने ऊर्ध्वाचेता होने के भाव को सार्थक करो। अपनी चेतना-शक्ति का, अपने ज्ञान का न कभी अहंकार करना और न ही किसी के अहित या किसी को कष्ट पहुँचाने के लिए इसका दुरुपयोग करना॥

८. भृगूणाम्[२४] **, अङ्गिरसाम्**[२५] **, तपसा**[२६] **, तप्यध्वम्**[२७] — गायत्री मन्त्र में 'भर्गो देवस्य धीमहि' वाक्य द्वारा परमात्मा के 'भर्ग' नामक तेज को धारण करने की बात कही गई है। एक ऐसा विलक्षण तेज जिसे धारण करने पर यह भर्ग-तेज उपासक के पापों का भर्जन कर देता है, उन्हें भून देता है। भूनने से पाप दग्धबीज हो जाते हैं अर्थात् नये पापों का जन्म नहीं होता, पापों की शृंखला छिन्न-भिन्न हो जाती है। ठीक वैसे ही जैसे गेहूँ, चने, धान आदि को भूनने पर उनकी प्रजनन क्षमता समाप्त हो जाती है; फिर उनसे नई फसल पैदा नहीं होती। यह 'भृगूणाम्' पद भी उसी अर्थ में 'अङ्गिरसाम्' का विशेषण बन कर प्रयुक्त हुआ है। ऐसी अंगिरा = प्राणविद्या जो समस्त दोषों को भूनने में समर्थ है। यदि उपासक इस प्राणविद्या की तपश्चर्या निरन्तर करता है तो उसके समस्त दोष दग्ध हो जाते हैं।

चेत्' (फिट्० १.१८) इत्याद्युदात्तत्वम्– आशा। ततः ॥ पञ्चमीबहुवचने भ्यस्-प्रत्ययः, विभक्त्यनुदात्तत्वेऽपि च स एवाद्युदात्तः स्वरः – आशाभ्यः॥

२१. चिञ् चयने (स्वादिगणः उभयपदी) इति धातोः 'क्विप् च' (अष्टा० ३.२.७६) इति क्विप्-प्रत्ययः, क्विपः सर्वापहारिलोपत्वात्, धातुस्वरेणाद्युदात्तत्वम्, ततो प्रथमाबहुवचने जस्-प्रत्ययः स चानुदात्तः– चितः॥ (चितं स्थ) संहितायाम् 'अत्र वा शर्प्रकरणे खपरे लोपो वक्तव्यः' (अष्टा० ८.३.३६ वा०) इति वार्तिकेन विसर्जनीयलोपः॥

२२. अस् भुवि (अदादिगणः, परस्मैपदी) इति धातोर्लटि मध्यमपुरुषबहुवचने 'थ'-प्रत्यये 'श्नसोरल्लोपः' (अ० ६.४.१११) इत्यकारलोपे प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तत्वम् 'स्थ', संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८ . १.२८) इति सर्वानुदात्तः॥

२३. उर्द माने क्रीडायां आस्वादने च (भ्वादिगणः आत्मनेपदी) इति धातोः 'उर्देर्धश्चः' (सरस्वतीकण्ठाभरणम० २.३. १२५) इति व-प्रत्ययः, दकारस्य धकारादेशश्च, 'उपधायां च' (अष्टा० ८.२.७८) इत्युपधादीर्घः – ऊर्ध् + व। यद्वा 'कॄगॄशॄदॄभ्यो वः' (उणादि० १.१५५) इति बाहुलकात् व-प्रत्ययः, धकारादेशः, उपधादीर्घश्च। प्रत्यय-स्वरेणान्तोदात्तः–ऊर्ध्व॥ ऊर्ध्व-उपपदपूर्वकं 'चिञ् चयने' (स्वादिगणः उभयपदी) इति धातोः 'क्विप् च'(अष्टा० ३.२.७६) इति क्विप्-प्रत्ययः, क्विपः सर्वापहारिलोपत्वात्, धातुस्वरेणाद्युदात्तत्वम्– चित्॥ उपपदसमासे 'समासस्य' (अष्टा० ६.१.२२३) इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते तद्बाधकं 'गतिकारकोपपदात् कृत्' (अष्टा० ६ २.१३९) इत्युत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (आद्युदात्तत्वं) प्राप्तम्, पूर्वपदस्वरस्य च निवृत्तिः, प्रथमाबहुवचने– 'ऊर्ध्वचितः'॥

२४. भ्रस्ज पाके (तुदादिगणः उभयपदी) इति धातोः 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां संप्रसारणं सलोपश्च' (उणादि० १.२८) इति कु-प्रत्ययः, संप्रसारणं भ्रस्जेः सलोपश्च– भृज् + उ। कित्त्वात् गुणाभावः, 'न्यङ्क्वादीनां च' (अष्टा० ७.३.५३) इति धातोः कुत्वम्– भृग्+उ। प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्ते प्राप्ते वृषादित्वाद् बाहुलकत्वाद्वाद्युदात्तः–भृगु। षष्ठीबहुवचने आम्-प्रत्ययः, नुडागमः, णत्वं च, विभक्तेरनुदात्तत्वात् प्रातिपदिक-स्वरेणैवाद्युदात्तत्वम् – भृगूणाम्॥

२५. अगि गतौ (भ्वादिगणः परस्मैपदी) इति धातोः 'अङ्गिराः'[अङ्गतेरसिरिरुडागमश्च] (उणादि० ४.२३६) इत्यनेन असि-प्रत्ययः, इरुडागमश्च, 'इदितो नुम् धातोः' (अष्टा० ७.१,५८) इति नुमागमः, परसवर्णश्च– 'अङ्ग् +

मनुस्मृति में कहा गया है –"जैसे अग्नि में तपाने और गलाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं वैसे ही प्राणों के निग्रह से मन आदि इन्द्रियों के दोष भस्मीभूत हो जाते हैं।"[२८]

वेदमन्त्रों में उपलब्ध भृगु, अङ्गिरा आदि शब्द व्यक्तिविशेष के वाचक न होकर अपने धात्वर्थ का ही अनुकरण करते हैं।[२९] वास्तव में वेद के शब्दों को लेकर नाम रखने की सुदीर्घ परम्परा रही है।[३०] आज भी सिख सम्प्रदाय के लोग 'श्री गुरु ग्रन्थ सहिब' से शब्द लेकर अपने नवजात शिशुओं के नाम रखते हैं। यह परम्परा उन्हें वैदिकों से ही प्राप्त हुई है॥

९. महर्षि दयानन्द का भावार्थ– महर्षि दयानन्द प्रार्थना को सही दिशा में पुरुषार्थ करने की प्रेरणा मानते हैं, जिस पुरुषार्थ में वे अपने अङ्ग-सङ्ग परमेश्वर को प्रतिक्षण अपने साथ पाते हैं, जिससे पुरुषार्थ में सकारात्मकता और धर्मभाव बना रहे। इस विधि का सौन्दर्य यह है कि कर्मकर्ता का पुरुषार्थ अहंकार शून्य होकर सदैव लोकहित की दिशा में परिणाम देने वाला होता है। मन्त्र में प्रार्थना की शैली है, जो महर्षि के भावार्थ में पुरुषार्थ के रूप में इस प्रकार प्रस्फुटित हुई है – "इस मन्त्र में श्लेषालङ्कार है। ईश्वर का यह उपदेश है कि हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों की उन्नति, मूर्खता के विनाश, सब शत्रुओं के निवारण तथा राज्य की वृद्धि के लिये वेदविद्या को ग्रहण करो। जो वृद्धि का हेतु अग्नि, सब का धारण करने वाला वायु, अग्निमय सूर्य और ईश्वर हैं; उन्हें सब दिशाओं में व्याप्त जानकर यज्ञसिद्धि और विमान आदि यानों की रचना धर्मपूर्वक करो तथा सिद्ध किए गए उन यानों को अग्नि और वायु से संचालित करो; जिससे दुःखों का निवारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो सके॥" भावार्थ में 'यज्ञसिद्धि और विमान आदि यानों की रचना' ये दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यहाँ यज्ञसिद्धि से तात्पर्य याज्ञिक अर्थात् वैज्ञानिक विधि से निर्माण किए गए विभिन्न यन्त्र प्रतीत होता है। ये यन्त्र ही विमान आदि की संरचना में प्रयोग किए जाते हैं। अग्नि और वायु से तात्पर्य आग्नेय-ऊर्जा और वायवी-ऊर्जा है, जिनसे विमान आदि संचालित होते हैं।

इरुट्ˉ + अस् = अङ्गिरस्'। वृषादित्वाद् बाहुलकत्वाद्वाद्युदात्तः– 'अङ्गिरस्', उज्ज्वलादयस्तु 'अङ्गिराः' इत्येवं निपातयन्ति तेषां मते निपातनादिष्टस्वरसिद्धिः॥ 'अङ्गिरस्' प्रातिपदिकात् षष्ठीबहुवचने आम्-प्रत्ययः, विभक्तेरनुदात्तत्वात् प्रातिपदिकस्वरेणैवाद्युदात्तत्वम्– 'अङ्गिरसाम्'

२६. तप सन्तापे (भ्वादिः परस्मैपदी) इति धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इति असुन्-प्रत्ययः, नित्त्वादाद्युदात्तः स्वरो यद्वा वृषादित्वादेवाद्युदात्तत्वम्–तपस्। तृतीयैकवचने टा-प्रत्ययः, विभक्तेरनुदात्तत्वात् प्रातिपदिक-स्वरेणैवाद्युदात्तत्वम् – तपसा॥

२७. तप सन्तापे (भ्वादिः परस्मैपदी) इति धातोः कर्मवाच्ये लोटि मध्यमपुरुष-बहुवचने ध्वम्-प्रत्यये– तप्+ ध्वम्। 'सार्वधातुके यक्' (अष्टा० ३.१.६७) इति यक्-प्रत्ययः– तप्+ यक् +ध्वम्। 'टित आत्मनेपदानां टेरे' (अष्टा० ३.४.७९) इति टेरेत्वे– तप्+ य + ध्वे। 'सवाभ्यां वामौ' (अष्टा० ३.४.९१) इत्यम्-भावः– तप् + य + ध्वम्। प्रत्ययस्वरेण 'ध्वम्'-उदात्तः, एकमुदात्तं परिवर्ज्य 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' (अष्टा० ६.१.१५७) इति शिष्टानामनुदात्तत्वम् – 'तप्यध्वम्', ततः 'उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः' (अष्टा० १.२.४०) इति 'प्यु'-निघातः /सन्नतरः – 'तप्युध्वम्'। संहितायां 'तिङ्ङतिङः' (अष्टा० ८.१.२८) इति सर्वानुदात्तत्वम् –'तप्यध्वम्'॥

२८. दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्॥ मनु० ६.७१॥

२९. द्र०– भृगुर्भृज्यमानो न देहे।–निरुक्त ३.१७॥, अङ्गिरा वा अग्निः।शतपथ० ६.४.४.४॥ इत्यादि प्रमाण।

३०. सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।

अभी तक खोजी गई या भविष्य में खोजी जाने वाली सभी प्रकार की ऊर्जाओं में 'अग्नि, वायु और जल' ही मूल स्रोत बनते हैं। इनमें भी 'अग्नि' सबसे प्रमुख है, जो आग्नेय, वायवी या जलीय ऊर्जा के निर्माण में सहायक होता है। वैदिक वाङ् मय में ऊर्जा के स्रोत के रूप में इन तीनों का उल्लेख विशद रूप में मिलता है।

श्लेषालंकार के आश्रय से महर्षि ने इस मन्त्र का दो प्रकार से अन्वय करते हुए दो अर्थ किए हैं; जिनमें एक अर्थ ईश्वरपरक है और दूसरा अर्थ शिल्पी विद्वान् के पक्ष में है॥ "[३१]

वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे ॥ मनु० १ ।२१ ॥

३१. द्र० – "अत्र श्लेषालङ्कारः। ईश्वरेणेदमादिश्यते भवन्तो विद्वदुन्नतये मूर्खत्वविनाशाय सर्वशत्रूणां निवारणेन राज्यवर्धनाय च वेदविद्यां गृह्णीयुः। योऽग्निर्वृद्धिहेतुः सर्वाधारको वायुरग्निमयः सूर्य ईश्वरश्च स्थ सन्ति, तान् सर्वासु दिक्षु विस्तृतान् व्यापकान् विदित्वा यज्ञसिद्धिं विमानादियानरचनं च धर्मेण कुर्वन्तु; ताभ्यामग्निवायुभ्यां यानानि चालयित्वा दुःखानि निवार्य शत्रून् विजयन्ताम्॥" – यजु० १.१८ पर महर्षि दयानन्द के भाष्य में संस्कृत भावार्थ॥

आचार्य की आवश्यकता

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं उपदेशक विद्यालय हेतु संस्कृत व्याकरण, उपनिषद्, दर्शन, संस्कृत साहित्य एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थों/सिद्धान्तों का अध्यापन करा सके। ऐसे सुयोग्य वैदिक विद्वान्/आचार्य की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति निम्न दूरभाषों पर सम्पर्क करें।

ओम्मुनि
प्रधान
९९५०९९९६७९

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री
९९१११९७०७३

प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में सञ्चालित आर्ष गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक धर्म के उपदेशक–प्रचारक बनने के इच्छुक युवा प्रवेश हेतु शीघ्र आवेदन करें।

प्रवेश हेतु अविवाहित एवं आठवीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। भोजन एवं आवास की निःशुल्क सुविधा है। **सम्पर्क सूत्रः ८८९०३१६९६१**

ओम्मुनि, प्रधान
९९५०९९९६७९

कन्हैयालाल आर्य, मंत्री
९९१११९७०७३

आवश्यक सूचना

परोपकारी के सुधि पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपना नाम व पते के साथ दूरभाष संख्या भी अंकित करावें ताकि परोपकारिणी सभा के आगामी कार्यक्रमों से सम्बन्धित सूचनाएँ आपको दूरभाष पर मैसेज के माध्यम से भेजी जा सकें। **परोपकारिणी सभा दूरभाष संख्या – ८८९०३१६९६१**

महर्षि दयानन्द जी से इतनी चिढ़ से कुछ नहीं बनेगा-१

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्री के रूप में दूसरे कार्यकाल में कुछ समय ऐसा आया कि संसद के अन्दर तथा बाहर भाजपा के बड़े-बड़े नेताओं तथा कई केन्द्रीय मन्त्रियों ने बहुत जोर शोर से अपने विरोधियों का विरोध करते हुए सनातन धर्म, सनातन धर्म की बहुत दुहाई दी। सनातन धर्म है क्या? उसके मूल सिद्धान्तों के सम्बन्ध में किसी ने कुछ भी नहीं कहा। प्रतिपक्ष की ओर से श्री राहुल ने हिन्दू धर्म व हिन्दुओं पर बहुत जोश से एक तोता रटन लगाई।

भाजपा के लीडरों ने सनातन धर्म की दुहाई देते हुए ईसाई राहुल गांधी को हिन्दू धर्म के व्याख्याता होने पर चुनौती देते हुए दो शब्द भी न कहे। देशभर के सहस्रों धर्म गुरुओं व मठाधीशों को यह कहने की हिम्मत ही न हुई कि आप तो ईसाई हैं। आप कब से शंकराचार्य का दायित्व निभाने लग गये? राम मन्दिर के निर्माण के समय मूर्तियों को स्थापना व प्राण प्रतिष्ठा करने में अग्रणी रहे किसी भी बड़े सनातनी ने राहुल गांधी की हिन्दू धर्म की व्याख्या करने पर इसे सनातन धर्म का अपमान नहीं माना।

उसी काल में संघ प्रमुख श्री भागवत ने प्रेस में खुलकर कहा, "जातपात मनुष्य की बनाई हुई है, भगवान् की बनाई नहीं है।" संघ के एक सौ वर्ष के इतिहास में यह घोषणा पहली बार ही प्रेस में की गई। हमने इस कथन का खुलकर स्वागत किया, परन्तु प्रश्न यह है कि संघ ने यह किसी से और कहाँ से सीख ली? अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द के भाषण को संघ वाले बड़ा महत्त्व दिया करते हैं, परन्तु उसमें तो इस विषय में यह कथन नहीं है।

श्री विवेकानन्द जी के उस भाषण से बहुत पहले निरन्तर २४ वर्ष तक महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के जाने माने शास्त्रार्थ महारथी सनातन धर्मी विद्वानों से गुण, कर्म व स्वभाव से वर्ण व्यवस्था विषय पर शास्त्रार्थ कर चुके थे। ऐसे बीसियों शास्त्रार्थ आर्यसमाज प्रकाशित कर चुका है।

श्री भागवत अथवा भाजपा के वे नेता जो सनातन धर्म की संसद् में और बाहर दुहाई देते रहे वे तब यह कहने का साहस ही न कर सके कि यह सीख वेदशास्त्रों के आधार पर महर्षि दयानन्द जी ने दी। किसी और ने नहीं। अपनी मतान्धता तथा संकीर्णता के कारण यह संघी अथवा भाजपाई नेता सत्य कहने तथा ऋषि दयानन्द जी का इस सम्बन्ध में नाम लेने से बहुत डरते हैं, परन्तु सत्य का गला ऐसे कौन घोंट सकता है? इन सनातन धर्म की दुहाई देने वालों ने देश-विदेश में यह भ्रम भी बहुत प्रचारित कर रखा है कि अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द जी के शिकागो के भाषण से अमेरिका अथवा विदेशों में किसी हिन्दू संन्यासी ने हिन्दू धर्म का डंका बजाया।

यह भी सर्वथा मिथ्या कथन है। स्वामी विवेकानन्द के इस भाषण से १४ वर्ष पूर्व अमेरिका के एक लोकप्रिय, नामी दैनिक पत्र The Sunday magazine में महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल में उनकी देन, उनकी विचारधारा तथा उनके जीवन के सम्बन्ध में एक लम्बा, पठनीय, खोजपूर्ण तथा प्रेरक लेख छप चुका था। इस लेख के साथ महर्षि का एक भव्य चित्र भी छपा था। भारत के जिस विचारक, सुधारक, नेता व मुनि, महात्मा का अमेरिका में सबसे पहले चित्र छपा था, वह महर्षि दयानन्द जी ही थे। यह ऐतिहासिक लम्बा लेख अब इस लेखक ने 'सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' आदि कई ग्रन्थों में छपवा दिया है।

सनातन धर्म है क्या? संसद् में वह संसद् से बाहर सनातन धर्म की तोता रटन लगाने वाले यह क्या नहीं जानते कि १. सागर पार जाना हिन्दू धर्म की दृष्टि से पाप माना जाता था। 2. 'विधवा विवाह' हिन्दू धर्म के अनुसार घोर पाप था। काशी आदि के किसी भी धर्माचार्य ब्राह्मण ने अपने घर में किसी बाल विधवा का विवाह होने दिया क्या? ३. ब्राह्मणों ने तो सन् १९५३-५४ में जब विनोबा

दलितों को साथ लेकर काशी के ऐतिहासिक मन्दिर में गये तो उनकी पिटाई धुनाई हो गई। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के किसी मन्दिर में दलितों का प्रवेश निषिद्ध नहीं था? यह तो ऋषि दयानन्द की कृपा का फल है कि दलितों के लिए आर्य मन्दिरों के द्वार खुल गये। ४. गायत्री जप का, वेद ऋचाओं को सुनने सुनाने का सबको अधिकार महर्षि ने ही दिलवाया। सनातन धर्म में ऐसा करना पाप था।५. आपने किस विधर्मी बने गये हिन्दू को अपनाया? जाति बन्धन तोड़कर संघ के किस-किस नेता ने विवाह किया? ६. ऋषि की कृपा से तो सन् १८७५ में ही क्रान्तिवीर श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जाति बन्धन तोड़कर हिन्दू समाज की एक कुरीति को चुनौती दे दी।७. आर्य समाज के प्रताप से माता भगवती, माता हरदेवी, माता गंगा बाई, माता गोदावरी आदि देवियों ने कुरीतियाँ चीर कर देश व समाज की रक्षा व नेतृत्व किया।

आज मेरठ जनपद के सब हिन्दू क्या नहीं जानते कि महाशय रघुवीर सिंह ने जब दलितों को गले लगाया तो उनका प्रचण्ड बहिष्कार किया गया। तब उनकी पूजनीया विधवा माता पोपों से टक्कर लेने आगे आई। है कोई ऐसी उस युग की दूसरी घटना? यशस्वी वेदज्ञ डॉ. वेदपाल जी उसी पूज्या माता का पौत्र है।

ऐसे पचासों पाप व कुरीतियाँ ऋषि दयानन्द की कृपा से मिट गई हैं। सनातन धर्म की दुहाई देने वाले ये भाजपाई नेता ऐसी दस-बीस कुरीतियाँ तो गिनावें जिनका इन्होंने उन्मूलन करने के लिए दु:ख कष्ट झेले। महर्षि दयानन्द जी के सुधार उपकार स्वीकार करने से भले ही आज इन्हें डर लगता है। भले ही यह महर्षि का नाम न लें, परन्तु सत्य को बोलबाला होकर रहेगा। कौन इसे रोक सकता है?

कौन नहीं जानता?

भाजपाई नेता राजा राममोहन राय की कोटि के नेता की ईसाई विधि से इंग्लैण्ड में बनी कब्र यदाकदा देखकर आते हैं। इन्हें सनातन धर्म के इस पतन पर कभी रोना आया क्या?

इसके विपरीत चम्बा के महाराजा का एक नौकर चन्दनसिंह लन्दन में मर गया। उसे ईसाई रीति से राज नियम के अनुसार वहाँ दबाया जाने लगा। तब वहाँ आर्यसमाज स्थापित हो चुका था। आर्यसमाज के उस समय के मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण उसके दाहकर्म करने के लिए लिए अड़ गये। माता हरदेवी, राय रोशनलाल आदि नेताओं ने शव की शोभा यात्रा निकालकर आर्यसमाज के जयकारों से लन्दन को गुंजा दिया। आश्चर्य तथा दु:ख का विषय है कि आर्यसमाज के इतिहास की ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना के विषय में घोर श्रम करके इस लेखक ने कई पत्र-पत्रिकाओं से अत्यन्त प्रामाणिक सामग्री व्याख्यानों व लेखों द्वारा प्रचारित की फिर भी आर्यसमाज के इतिहास में इस विषय में एक पैरा भी किसी ने नहीं लिखा। अपने आपको आर्यसमाज का सब से बड़ा इतिहासकार होने की डींग मारना तो सरल है, परन्तु इतिहास की प्रामाणिक जानकारी तथा पकड़ होना दूसरी बात है।

आर्यसमाज में मिथ्या इतिहास लेखन व प्रचारित ऐसा हुआ है कि किसी सभा तथा दो-चार विद्वानों ने मिलकर इतिहास प्रदूषण व गप्पों से आर्यसमाज को बचाने के लिए कोई योजनाबद्ध रीति से इस रोग को दूर करने के लिए कुछ नहीं किया। कुछ उदाहरण लीजिए।

पं. निरञ्जनदेव जी आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान तो थे ही। आप मत पन्थों का उत्तर प्रत्युत्तर देने वाल सिद्धहस्त लेखक व सुवक्ता थे। सरकार ने तुष्टिकरण के लिए आप पर एक लम्बा केस चलाकर आपको यातनायें दीं। अन्तत: वह केस हटाया गया। आर्य लेखक कोश ग्रन्थ में आपको दी गई यातनाओं पर और केस के बारे में डॉ. भारतीय ने एक शब्द नहीं लिखा। लेखक कोश में आपके जीवन व सेवा पर मात्र सात पंक्तियाँ लिखी हैं। साठ वर्ष से ऊपर सेवा का यह फल।

इसके विपरीत श्रीमती गार्गी माथुर पर मात्र एक ही लेख छपवाने के कारण इसी ग्रन्थ के पृष्ठ ५९ पर पाठक १३ पंक्तियाँ पढ़ सकते हैं।

आर्यसमाज ने स्त्री जाति के लिए क्या नहीं किया? ऋषि जी तथा आर्यसमाज की कृपा से माता भगवती से

लेकर हुतात्मा माता गोदावरी सरीखी कई संघर्षशील देवियों ने देश धर्म के लिये नया-नया इतिहास रचा है। ऐसी महान् देवियों पर किस लेखक व किस सभा ने सौ दो सौ पृष्ठ की सामग्री कभी छपवाई है?

माता गोदावरी हुतात्मा- देश के स्वराज्य संग्राम में हैदराबाद को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए उस राज्य की एक निडर बलिदानी आर्य देवी गोदावरी जी को निजाम की क्रूर देशघाती पुलिस ने गोलियों से भून कर जीवित जला दिया। इस घटना का दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता। अब तो विशेष यत्न करने पर इस बलिदानी देवी का इतिहास की पुस्तकों में नाम आ गया है। इसके लिये कड़ा संघर्ष करना पड़ा था।

परोपकारिणी सभा का इतिहास सम्भवत: दो बार छपा है। इसमें आज तक के सभा के सब सदस्यों का जीवन परिचय दिया गया है। उस इतिहास लेखक ने अपने विषय में भी उतने ही पृष्ठ लिखे हैं जितने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर उसमें लिखे हैं। क्या इसे इतिहास कहा जावेगा? लेखक के मन मे जो आया सो इतिहास के नाम पर उसमें लिख मारा। कुछ उदाहरण लीजिए। लाला लाजपतराय जी बी.ए. एल.एल.बी. थे। क्या यह विशुद्ध गप्प नहीं?

''लाला चरणदास पुरी बैरिस्टर थे।'' मैं उन्हें बहुत अच्छी प्रकार से जानता हूँ। वह सागर पार कभी पढ़ने गये ही नहीं थे। इस प्रकार की गप्पों से आर्यसमाज के इतिहास को प्रदूषित क्यों किया गया?

श्री महाशय कृष्ण जी के लिए इसमें लिखा है कि आपको इंग्लैण्ड से एक उपाधि दी गई "A Fiery Editor of Lahore." अर्थात् लाहौर का एक आग्नेय सम्पादक। महाशय जी ने प्रताप, वीर अर्जुन तथा आर्यज्योति साप्ताहिक में अपने कई लेखों में यह लिखा था कि लाला लाजपतराय जी के देश से निष्कासित किये जाने पर लन्दन के एक समाचार-पत्र ने महाशय जी को कारागार की काल कोठरी में ठूंसने के प्रयोजन से उनके बारे ये शब्द लिखे थे। यह कोई उपाधि नहीं थी। आर्यसमाज में इतिहास के नाम पर ऐसी एक नहीं सैंकड़ों गप्पें परोसी गई हैं। कोई इस अनर्थ के विषय में बोलता ही नहीं।

महात्मा हंसराज ने अपने बारे में यह लिखा है कि आपने पं. गुरुदत्त जी के साथ लाहौर से बी.ए. पास किया था। आर्यलेखक कोश में यह छपा है कि आपने कोलकाता से बी.ए. किया था। क्या ऐसी मनगढ़न्त गप्पों को सहन किया जावे अथवा आर्यसमाज को इन गप्पों से मुक्त करने का सबल अभियान छेड़ा जावे?

'आर्य लेखक कोश' में ही मेरे बारे यह छपा है कि मैंने हिसार दयानन्द कॉलेज से एम.ए. पास किया। यह कथन तो विशुद्ध कल्पित कथन है। पंजाब के विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि मैंने सन् १९६१ में इस विभाग से एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की थी। न जाने आर्यसमाज में ऐसी कहानियाँ गढ़ने वाले इतिहास लेखक को ऐसी सूझबूझ कहाँ से मिली? उसे ऐसी कल्पित कहानियाँ सूझती कैसे थीं?

प्रबुद्ध पाठक यह नोट कर लें कि 'आर्य लेखक कोश' ग्रन्थ में इतिहास विषयक एक सहस्र गप्पें मिलेंगी। अब मेरे जीवन की सांझ है। इस सम्बन्ध में क्या-क्या लिखा जावे? तथापि मेरे मन में रह-रह कर अब यह विचार आता है कि जैसे कैसे भी हो सकता है 'आर्य लेखक कोश' ग्रन्थ की मनगढ़न्त सामग्री पर कोई विशेष टिप्पणी किये बिना बहुत संक्षेप से इतिहास की मिथ्या घटनाओं पर कुछ लिखकर आर्यसमाज को कलङ्क मुक्त किया जावे। आने वाली पीढ़ियाँ यह तो न कह सकें कि आर्यसमाज में सत्य कथन कहने का किसी में साहस ही नहीं था या कोई यथार्थ इतिहास को जानता ही नहीं था। जो कुछ भी लिखा जावेगा वे यथार्थ, तथ्यपूर्ण, प्रामाणिक तथा प्रेरक ही होगा। कुछ एक व्यक्ति भले ही मेरे इस प्रयास से दु:खी हों, परन्तु ऋषि मिशन के कर्मठ और समर्पित सब ऋषिभक्त मेरी सेवा तथा पुण्य प्रयास को देखकर गद्‌गद होंगे।

(क्रमश:)

वेदन सदन, न्यू सूरजनगरी, अबोहर, पंजाब।

दयानन्दी षड्यन्त्र या दयानन्द के उपकार-१

समीक्षक-धर्मेन्द्र जिज्ञासु

मुझे किसी दलित भाई के द्वारा श्री बाली द्वारा लिखित पुस्तक ''हिंदुइज्म धर्म या कलंक'' पढ़ने को मिली, जिसमें वेदों व उपनिषदों के बारे में अनर्थक बातें लिखी हुई हैं। पुस्तक के अंत में ''दयानन्दी षड्यन्त्र'' के नाम से एक विशेष अध्याय भी छपा है। लेखक ने हिन्दू धर्म में कुछ सैंकड़ों वर्ष पूर्व प्रचलित हुई गलत मान्यताओं को प्रमुखता देते हुए हिन्दू धर्म को कलंक कहा है और बौद्ध मत को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने का प्रयास किया है। महात्मा बुद्ध या बौद्ध मत से हमारा कोई विद्वेष नहीं है किंतु वेद व उपनिषदों के बारे में और महर्षि दयानन्द जी के बारे में इस पुस्तक में जो गलत बातें लिखी गई हैं , उनका प्रत्युत्तर देना आवश्यक है, क्योंकि राष्ट्ररक्षक पंडित लेखराम जी का आदेश था कि आक्षेप करने वालों को तुरन्त उत्तर दिया जाना चाहिए। पुस्तक की समीक्षा करने से लेखक का या बौद्ध मतानुयायिओं का दिल दुखाना हमारा अभिप्राय नहीं है बल्कि सत्य असत्य का निर्णय करने में पाठकों की सहायता करना है।

१. पुस्तक : वेद जंगली पुस्तक हैं जिनमें असभ्य लोगों द्वारा धन, जमीन, गौएं, पुत्र आदि प्राप्ति की तथा शत्रुओं को नष्ट करने की प्रार्थनाएं हैं।

समीक्षा : लेखक का यह लिखना कि वेदों में युद्ध और मारकाट का ही वर्णन भरा पड़ा है, पूर्णतया अप्रमाणिक और अनुचित है, क्योंकि वेद केवल पृथ्वी पर ही नहीं , बल्कि समस्त ब्रह्माण्ड में और केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, समस्त जीव जन्तुओं आदि के लिए सुख शांति स्थापित करने के लिए निर्देश करते हैं। जैसे कि 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'।

केवल वेदों में यह निर्देश है कि मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनो, क्योंकि वेद सृष्टि के आरंभ में ईश्वर द्वारा दिया गया दिव्य ज्ञान है। जबकि ईसाई मत, इस्लाम मत , बौद्ध मत कहते हैं- कि ईसाई बनो, मुसलमान बनो या बौद्ध बनो और ये सभी मत सम्प्रदाय आज से कुछ सहस्र वर्ष पूर्व ही प्रवर्तित हुए हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम्, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे, ओम् द्यौ शांति, अंतरिक्ष शांति, पृथ्वी शांति, सर्वे भवंतु सुखिन:'' इत्यादि विश्व कल्याण की बातें सर्वप्रथम वेदों में ही कही गई हैं। अत: लेखक का इन्हें जंगली पुस्तक कहना बिल्कुल ही अनुचित है।

वेद मंत्रों में धन, जमीन, गौएं, पुत्र आदि प्राप्त करने की प्रार्थनाएं हैं और परोपकारी जीवों के हत्यारों को नष्ट करने की प्रार्थना हैं तो उसमें अनुचित क्या है? इसमें असभ्यता क्या है? मनुष्यों को सुखी समृद्ध जीवनयापन के लिए यह सब अनिवार्य है। असभ्य और अन्यायी तो निर्दोष और परोपकारी जीवों को मारने वाले हैं।

उदाहरण के लिए ऋग्वेद १.३६.१५ तथा १.३६.१४ इन प्रार्थनाओं से स्पष्ट है कि आर्य यानी सभ्य लोगों को तंग करने वाले स्वयं ही असभ्य थे। लेखक जिसे मनुष्यों में हुई मारकाट समझ रहा है वह वास्तव में मानसिक द्वन्द्व का अलंकारिक वर्णन है। जैसे बौद्ध ग्रन्थ सुत्तनिपात के पधानसुत्त में बोधिसत्व की मार कथा है।

ऋषि परम्परा तथा गुरुकुल शिक्षा से अनभिज्ञ होने के कारण लेखक वेदमंत्रों के वास्तविक अर्थ नहीं समझ सका। क्या मात्र अंग्रेजी सीख लेने से ही कोई मेडिकल साइंस की पुस्तक का अथवा इंजीनियरिंग की पुस्तक का अर्थ समझ सकता है? वेदों के सही अर्थ जानने के लिए महर्षि दयानन्द जी का ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रंथ पढ़ना आवश्यक है।

२. पुस्तक- वेदों में ज्ञान ढूंढना मरुस्थल में पानी ढूंढने की तरह है।

समीक्षा: वेदों की तुलना मरुस्थल में पानी की उपलब्धता से करना ही बिल्कुल अप्रासंगिक है, क्योंकि

मरुस्थल में तो पानी मिलना एक अपवाद है। लेकिन वेदों में तो सर्वत्र ही ज्ञान की बातें हैं।

३. पुस्तक : वेद में ज्ञान के नाम पर अश्लीलता भरी पड़ी है।

समीक्षा : यह कहना कि वेदों में ज्ञान के नाम पर अश्लीलता भरी पड़ी है, बिल्कुल अनुचित बात है। लेखक महोदय ने संभवत: सायण व महीधर द्वारा किये गये वेदभाष्य में से कुछ प्रसंग लिए हैं, परन्तु उनका सही अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में कर दिया है जो की ब्रह्मा जी से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यंत, ऋषियों की शैली रही है।

अश्लीलता वेद में नहीं बल्कि ऋषि शैली विरुद्ध वेद भाष्य करने वालों की विकृत बुद्धि की देन है।

४. पुस्तक : वेद निंदनीय पुस्तक है। आर्य आक्रमणकारी थे। बाबा साहब तो वेद शास्त्रों को बेकार की किताबें मानते थे।

समीक्षा : लेखक महोदय अगर आप महर्षि दयानन्द जी की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़ लें तो आपको पता चलेगा कि वेद निंदनीय नहीं बल्कि वंदनीय व अभिनंदनीय पुस्तक हैं। आप बुद्ध का राग तो अलापते हैं, परन्तु बुद्ध की बात नहीं मानते। ''श्री भदंत आनंद कौशल्यायन जी'' ने अपनी पुस्तक ''तथागत'' के पृष्ठ २२५ पर लिखा है कि ऐसा कहीं प्रमाण नहीं मिलता कि बुद्ध ने वेदों की निंदा की हो। उल्टे हर जगह वेद अभ्यास का गौरव मिलता है।

ऐसे ही आप आर्यों के बारे में, दलित साहित्य में जो कुछ लिख रहे हैं उससे स्पष्ट है कि आप बुद्ध के सच्चे अनुयाई नहीं, क्योंकि अगर आर्य विदेशी या आक्रांता रहे होते तो महात्मा बुद्ध अपने उपदेशों में आर्य चतुष्टय, आर्य सत्य आदि शब्दों का कभी प्रयोग नहीं करते।

आप कहते हैं कि बाबा साहेब अम्बेडकर तो वेदशास्त्रों को बेकार की किताबें मानते थे तो यह भी ध्यान रखें कि बाबा साहब ने खुद स्वीकार किया था कि वह संस्कृत के विद्वान् नहीं हैं। हिंदू धर्म ग्रंथों का अध्ययन उन्होंने, विदेशी यूरोपियन विद्वानों द्वारा (भारतीय संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के उद्देश्य से) किए गए अंग्रेजी अनुवाद की मदद से किया था। यूरोपियन विद्वान्, निष्पक्ष लेखक की तरह नहीं बल्कि सूली व साम्राज्य के सेवक के रुप में कार्य करते थे। महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित बाबा साहब अम्बेडकर के लेख व भाषण, सातवां वॉल्यूम पृष्ठ ८५ व ३०२-३०३ पर स्पष्ट लिखा है कि वेदों में ऐसा कुछ भी नहीं है कि आर्य बाहर से आए या उन्होंने द्रविड़ों को मार भगाया था। अगर उन्हें ऋषि दयानन्द जी का वेदभाष्य तथा प्रक्षेप रहित मनुस्मृति का विशुद्ध संस्करण पढ़ने को मिला होता तो उनके विचार वेदों-मनुस्मृति के बारे में विकृत नहीं रह सकते थे।

५. पुस्तक : उपनिषदों के लिखने वालों को कुत्तों बिल्लियों से ज्ञान प्राप्त हुआ। नचिकेता यम के पीछे भटकता रहा। अंत में यम ने उसे आत्मा की अमरता का ज्ञान देकर बहका दिया।

समीक्षा : लेखक महोदय न्यूटन ने सेब से, जेम्स वाट ने चाय की केतली से शिक्षा ली थी। वैज्ञानिकों ने चंद्रमा पर क्या-क्या ढूंढ निकाला, वरना लोग तो उसमें दाग ही देखते रहे। उपनिषदकारों को तो छोड़ो, जातक कथाओं में तो बोधिसत्व खुद ही कुत्ता, बिल्ली, सारस, शेर व चिड़िया बनकर ज्ञान बांटते थे, ऐसे प्रमाण उपस्थित हैं।

बौद्ध ग्रंथ महावग्ग के पृष्ठ ३०३ पर लिखा है कि खुद महात्मा बुद्ध ने मगध के खेतों को देखकर ही भिक्खुओं के चीवर भी टुकड़ों वाले बनवाने की शिक्षा दी थी। रही बात नचिकेता की- तो उसे यम के जवाब से शांति और संतोष तो मिल गया था, परन्तु तक्षशिला का राजा पुक्कुसाति तो महात्मा बुद्ध के चक्कर में राजपाट त्याग राजगृह तक पैदल आया, बुद्ध का उपदेश सुनकर कूड़े कचरे में चीवर ढूंढते हुए गाय द्वारा मार डाला गया; ऐसा मज्जिम निकाय-धातु निभंग सुत कथा में लिखा

है।

६. पुस्तक : उपनिषदों की रचना बुद्ध के बाद हुई है।

समीक्षा : उपनिषदों की रचना की बात तो छोड़ो कुछ बौद्ध तो यहां तक विश्वास करते हैं कि बौद्ध संस्कृति तो बुद्ध से भी बहुत पहले की है, क्योंकि कहावत है कुए के मेंढक को कुएं से बड़ा कुछ नजर आता ही नहीं है। अगर महात्मा बुद्ध उपनिषद् काल से पहले हुए होते तो उनका नाम या वर्णन किसी उपनिषद् में आना चाहिए था। जबकि किसी भी उपनिषद् में ऐसा वर्णन नहीं आता है। यह सबसे बड़ा प्रमाण है कि उपनिषदों के पश्चात् ही महात्मा बुद्ध का काल है, उससे पूर्व का नहीं।

७. पुस्तक : वेद पुराणों के लिखने वाले धूर्त पाखंडी हैं। उनकी कथाएं पागलों की झल्लाहट हैं।

समीक्षा : वर्तमान स्वरूप में पुराण जैसे उपलब्ध होते हैं उसमें अनेक आपत्तिजनक कथाएं हैं। ऐसा लगता है कि पुराने समय में वामपंथियों द्वारा अथवा धर्मध्वजी लोगों द्वारा बहुत प्रक्षेप किए गए हैं। चार्वाक की बातें चार्वाक जैसों को ही सुहाती है। श्री धर्माननद कौशाम्बी अपनी पुस्तक "भगवान बुद्ध" में लिखते हैं कि महापदान सुत्त में दी गई विपस्सी बुद्ध की दंत कथाएं गौतम बुद्ध की कथा में मिल गई हैं। ऐसे ही धार्मिक ग्रंथों में जानबूझकर या अनजाने में प्रक्षेप होते रहते हैं। ऐसे ही किसी लेखक ने आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द तथा भारत धर्म महामंडल काशी के स्वामी दयानन्द जी को एक ही व्यक्ति समझकर दोनों के जीवन की घटनाओं को मिला दिया है।

अल्प ज्ञानी को ज्ञान की बातें पागलों की झल्लाहट ही लगती है ।

८. पुस्तक : ऋषि मुनि मांस खाया करते थे।

समीक्षा : ऋषि मुनियों ने कभी मांस नहीं खाया। वेदों में मांस खाना तो दूर यहां तक कि जीव जंतुओं की हत्या की घोर निंदा की गई है और मनुस्मृति में तो स्पष्ट निर्देश है की मांस खाने की इच्छा से पशुओं को बेचने वाला, खरीदने वाला, मारने वाला, काटने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला, खाने वाला- यह सभी आठ पाप के भागी हैं। अत: ऋषि मुनियों को मांस खाने वाला कहना भारतीय धर्म संस्कृति को जानबूझकर कलंकित करने का प्रयास है। हिंदू धर्म का अवमूल्यन करने के लिए विदेशी विद्वान् वेदमंत्रों का ऐसा अनर्थ जानबूझकर करते थे। वामपंथियों और वाममार्गियों द्वारा भी ऐसे अनर्थ किये जाते रहे हैं। सायन और महीधर द्वारा भी ऋषि शैली विरुद्ध अर्थ किये गये हैं। अगर लेखक महोदय महर्षि दयानन्द जी की बात करते हैं तो उन्हें वेदमंत्रों का अर्थ भी महर्षि दयानन्द जी तथा आर्यविद्वानों के भाष्य से ही उपस्थित करना चाहिए।

परन्तु लेखक महोदय इस बात को बिल्कुल ही भूल गए कि महात्मा बुद्ध की तो मृत्यु ही सूअर का मांस खाने से हुई थी। प्रमाण के लिए देखिए अंगुत्तर निकाय, पंचक निपात-उग्ग गहपति प्रसंग। भदंत आनंद कौशल्यायन अपनी पुस्तक "तथागत" में लिखते हैं महात्मा बुद्ध ने प्रेमवश चुंद लुहार का दिया सूअर के बच्चे का मांस खाया।

नंगुटठ कथा के पृष्ठ १४४ पर वर्णन है बोधिसत्व मांस खाया करते थे।

महात्मा बुद्ध की पूजा करने वाले देशों में जैसे थाईलैंड, कम्बोडिया, वियतनाम इत्यादि में आज सर्वाधिक मांस खाया जाता है। समुद्र में रहने वाले हर प्रकार के जीवों को यहां के बौद्ध अनुयायी बेहिचक खाते हैं।

९. पुस्तक : हिंदुओं के छह दर्शन एक दूसरे से बिल्कुल ही उल्टे हैं। इनमें एक-दूसरे से विपरीत बातें हैं।

समीक्षा : लेखक की यह बात बिल्कुल भी उचित नहीं है, क्योंकि छह दर्शन एक ही तत्त्व के गुणों का वर्णन अलग-अलग दृष्टिकोण से करते हैं। उनमें कहीं भी विरोध नहीं है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के

अष्टम समुल्लास में लिखते हैं- मीमांसा दर्शन में कर्मचेष्टा, वैशेषिक दर्शन में समय, न्याय दर्शन में उपादान कारण, योगदर्शन में विद्या, ज्ञान, विचार; सांख्य दर्शन में तत्वों का मेल, वेदान्त दर्शन में बनाने वाला, इन छह कारणों से सृष्टि बनती है। इन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं।

लेकिन बौद्धों के सौमान्त्रिक, वैभाषिक, योगाचार तथा माध्यमिक सम्प्रदाय जरूर एक-दूसरे से उल्टे हैं।

१०. पुस्तक : पुराणों में सिर्फ बेसिरपैर की कथाएं हैं।

समीक्षा : ऋषि शैली के विरुद्ध वेदभाष्य करने वालों की असावधानी से, अलंकारिक वर्णन को न समझने से तथा शैव शाक्त वैष्णव सम्प्रदायों द्वारा अपने-अपने मत-सम्प्रदाय को सर्वोच्च प्रमाणित करने की होड़ में पुराणों की कथाएं रची गईं। लेकिन उनमें सब कुछ ही बेसिर पैर का नहीं है। लेखक महोदय को संभवतः यह पता नहीं है कि पुराण ही नहीं मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद जैसी बीमारियां भी बौद्धों की ही देन हैं।

एक प्रमाण प्रस्तुत है।

भदंत आनंद कौशल्यायन ने अपनी पुस्तक 'तथागत' के पृष्ठ १५४ पर लिखा है-"अपने धर्म व संघ का महत्त्व बढ़ाने के लिए बौद्ध भिक्षुओं ने बेसिर पैर की कथाएं रची और ब्राह्मणों ने उनसे भी अधिक अद्‌भुत कथा गढ़ कर भिक्षुओं को पूरी तरह हरा दिया।"

बौद्ध भाइयों को देखो जिनमें बुद्ध की प्रतिमा पूजने की होड़ लगी हुई है। भारतवर्ष में सर्वप्रथम मूर्ति जो भगवान् के नाम पर बनी और पूजी गई -वह भी बुद्ध की मूर्ति थी, उससे पूर्व देश में मूर्ति पूजा कहीं नहीं होती थी।

महापदान सुत्त में बुद्ध जन्म के समय के १६ चमत्कार दिए गए हैं, जैसे बोधिसत्व की मां ने १० मास पूर्ण होने पर बुद्ध को जन्म दिया (नौवां चमत्कार), प्रसव खड़े-खड़े ही हुआ (दसवां चमत्कार)। सुत्तनिपात, नालकसुत्त के अनुसार बुद्ध के जन्म पर इन्द्र आदि देवताओं ने उत्सव मनाया। जातक निदान कथा के अनुसार बोधिसत्व के जन्म के समय ही राहुल माता देवी, छन्न अमात्य, कालुदायि कंथक, अश्वराजा, महाबोधि वृक्ष व चार धन के भरे घड़े भी पैदा हुए। जब बोधिसत्व ने कंथक पर सवार होकर गृह त्यागा तो देवताओं ने नगर के द्वार ऐसे ही खोल दिए जैसे कि कृष्ण जन्म के समय कारागार। इससे भी स्पष्ट है कि महात्मा बुद्ध का समय, योगेश्वर श्रीकृष्ण के समय के पश्चात् का है, क्योंकि महाभारत आदि ग्रनथों में बुद्ध का कहीं वर्णन नहीं है।

लंका अवतार कथा में शाक्य मुनी व रावण की भेंट, सांख्य व पाशुपत मतों का विवेचन, व्यास व महाभारत की भविष्यवाणी इत्यादि अनेक गपोड़े बौद्ध भिक्षुओं ने लिख मारे हैं।

११. पुस्तक : हिन्दू धर्म धर्म नहीं, नियमों का जाल है।

समीक्षा : लेखक महोदय हिन्दू धर्म को नियमों का जाल बताते हैं जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र बता दें कि जिसमें नियमों के बिना सभी कार्य समय पर सुचारू रूप से सम्पन्न किये जा सकें। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, सेवा का क्षेत्र हो, देश रक्षा की बात हो-सर्वत्र नियमों की आवश्यकता है।

श्री पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय आस्तिकवाद ग्रंथ में लिखते हैं- "कोई व्यवस्था नहीं होना ही सबसे बड़ी अव्यवस्था है। अगर कोई व्यक्ति एक बगीचे के चारों ओर लगे हुए कांटों की बाढ़ को जो कि उस बगीचे की रक्षा के लिए है, यह समझ बैठे कि इस बगीचे में तो कांटे ही कांटे हैं तो यह उसकी अज्ञानता है।"

और लेखक महोदय यह नहीं जानते कि बौद्ध विद्वान् भदंत आनंद कौशल्यायन अपनी पुस्तक "तथागत" के पृष्ठ ४६ पर लिखते हैं कि एक भिक्षु ने नियमों से दुःखी होकर भगवान् बुद्ध से कहा था कि मैं प्रव्रज्या से मुक्त होता हूं, क्योंकि मैं इतनी बड़ी नियमावली का पालन

नहीं कर सकता।

धर्मानन्द कौशांबी जी ने अपनी पुस्तक ''भगवान् बुद्ध'' के पृष्ठ तीन पर लिखा है- ऐसे ही नियमों से दु:खी होकर एक भिक्षु ने बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् बुद्धघोषाचार्य से कहा था कि यह अच्छा हुआ कि हमें बंधनों में रखने वाले शास्ता का निर्वाण हो गया।

संघ के संविधान पातीमोक्ख में भिक्षुओं के लिए २२७ तथा भिक्षुणियों के लिए ३११ नियम हैं। इतने पर भी लेखक का यह लिखना कि हिंदू धर्म नियमों का जाल है उनकी अज्ञानता और पक्षपात को प्रदर्शित करता है।

१२. पुस्तक : हिंदू अपनी श्रेष्ठता पर बहुत घमण्ड करते हैं, जबकि बुद्धि से इनका खास वास्ता नहीं है।

समीक्षा : लेखक महोदय महाभारत काल तक आर्य हिंदुओं का डंका दुनिया के कोने कोने में बजता रहा तभी आर्य हिंदुओं को अपनी श्रेष्ठता पर घमण्ड था। इस तथ्य को भारतीय तथा विदेशी लेखकों ने अपनी पुस्तकों में प्रमाण सहित स्वीकार किया है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं कि जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिश्र, यूनान और यूरोप देश आदि के मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी और इंग्लैंड के कुलम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जब तक नहीं गए थे तब तक वह भी सहस्त्रों, लाखों, करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात विद्याहीन ही थे।

सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा है जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों, उन से यूनानी, उनसे रूस और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।

इसके लिए महर्षि दयानन्द जी ने एक यूरोपियन का ही प्रमाण दिया है। वह लिखते हैं देखो! एक गोल्डस्टकर साहब पैरस अर्थात फ्रांस देश निवासी अपनी 'बाइबिल इन इंडिया' में लिखते हैं कि सब विद्या और विद्या का भण्डार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं।

दारा शिकोह बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है, वैसी किसी भाषा में नहीं। वह ऐसा उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत सी भाषा पढ़ीं, परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनंद न हुआ। जब संस्कृत देखा और सुना तब निसंदेह होकर मुझको बड़ा आनंद हुआ है।

रही बात बुद्धि की तो प्रव्रज्या के समय, सभा में बात करते समय, उपाध्याय धारण करते समय -हर बात को तीन-तीन बार दोहराने में आपकी बुद्धिमानी के क्या कहने? प्रव्रज्या के समय स्त्रियों के सर मुंडवाने में, उपाध्याय के बर्तन बिना रगड़ साफ किए धूप में सुखाने में, चरखी घूमाकर सेकिण्ड़ो में लाखों मंत्रों का जप समझने में, बुद्ध की मूर्ति पूजकर निर्वाण समझने में, गली-चौराहे, नदी-तालाबों के किनारे पड़े फटे पुराने वस्त्रों को चुनकर चीवर बनाने में, कुटी या चीवर की लंबाई चौड़ाई बुद्ध के बित्ते से मापने में क्या बुद्धिमत्ता है, यह आप ही जानें?

१३. पुस्तक : नींत्से को फासीवाद की प्रेरणा उपनिषदों से ही मिली। संभोग से समाधि तक के सूत्र भी में इनमें ही छुपे हुए हैं। अश्लीलता को ज्ञान का नाम खूब दिया गया है

समीक्षा : फासीवाद की प्रेरणा उपनिषदों से मिली, यह बात ठीक ऐसी है कि जैसे कोई कहे कि हमें हत्या, बलात्कार, पक्षपात की प्रेरणा संविधान से मिलती है। उपनिषदों के जिस प्रसंग को आप अश्लील बता रहे हैं, वह सन्तान उत्पत्ति के बारे में है। क्या मेडिकल साइंस में योनि व लिंग तथा प्रजनन के बारे में पढ़ाना अश्लीलता माना जाता है?

मज्झिम निकाय, महासिंहनाद सुत्त में बुद्ध सारीपुत से कहते हैं- ''शाक, श्यामक चमार द्वारा फेंके गए चमड़े के टुकड़े, काई, भूसा, गाय का गोबर मैं खाता था। बछड़े का गोबर तब तक खाता था जब तक मेरा

मल-मूत्र ना रुक जाता -शमशानों के वस्त्र ओढ़ता था।''

लेखक महोदय शायद यहीं से अघोरियों व वाममार्गियों को प्रेरणा मिली होगी। यह तो आप कहने की हिम्मत नहीं कर पाए और स्वामी दयानन्द को आपने गड़े मुर्दे उखाड़ने वाला कहा है, परन्तु बुद्ध द्वारा चमार शब्द के प्रयोग पर आप बुद्ध को भी क्या ऐसा कहने की हिम्मत कर सकेंगे?

१४. पुस्तक : अध्याय दयानन्दी षड्यन्त्र (पृष्ठ २९७) डॉ अम्बेडकर ने कहा ''दयानन्द ने जन्म की जगह गुण कर्म को आधार बनाकर जाति भेद जैसी घातक प्रथा को चिरस्थाई बनाया और तथाकथित अछूतों की दासता को सुदृढ़ किया। उनके शिक्षाओं का सारांश यह है- अछूत नीच है, शूद्र केवल सेवा के लिए हैं, शूद्र का उपनयन ना करें, उसे वेद ना पढ़ावे, जिस प्रकार पांव सबसे नीचे अंग है वैसे अज्ञान आदि नीच गुणों से शूद्र नीच होता है, शूद्र स्त्रियां मुंह पर पट्टी बांधकर रसोई बनावें, स्त्रियां नीच है इत्यादि।

समीक्षा : लेखक महोदय कितने पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं वह इस कथन से स्पष्ट है कि दयानन्द ने जाति का आधार गुण कर्म बता कर उसे चिरस्थाई बना दिया। हम लेखक से जानना चाहते हैं कि आप जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था से दु:खी थे, अब गुण कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था से भी। आप कहीं इसलिए तो दु:खी नहीं है कि महर्षि दयानन्द जी ने यह प्रमाण वेशद और मनुस्मृति से दिया है।

डॉ अम्बेडकर ने महात्मा गांधी के वर्ण एवं जाति के विचारों को नकारते हुए कहा था ''लेकिन मैं यह मानता हूं कि वर्ण व्यवस्था का वैदिक सिद्धान्त जैसा कि स्वामी दयानन्द ने प्रतिपादित किया है, एक विवेकपूर्ण और ऐसा सिद्धान्त है जिस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती।'' (पुस्तक गांधी और अम्बेडकर, लेखक डीसी अहीर, अनुवाद देवेशचंद्र पृष्ठ ३७)।

भारत के संविधान में जातिगत आरक्षण जो सिर्फ प्रथम १५ साल अर्थात १९६५ ई. तक था- क्या उसने जातिवाद को हमेशा के लिए अमर नहीं कर दिया है? आरक्षण की बैसाखी से नौकरी पाने वालों से पूछो जिनको सरकारी मेहमान, सरकारी दामाद जैसे तमगों के साथ नौकरी करनी पड़ती है। Schedule Cast का तमगा मरते दम तक उनका पीछा नहीं छोड़ता। तो लेखक महोदय क्या आप बाबा साहब को भी यही सब कहने की हिम्मत कर सकेंगे कि अपने जाति प्रथा को नया जीवन प्रदान कर दिया उसको हमेशा के लिए अमर कर दिया है?

परन्तु सिगालोवाद सुत्त में बुद्ध ने तो स्वयं ब्राह्मणों को ऊपर की दिशा तथा दास एवं कर्मकारों को नीचे की दिशा बताया है। अगर आप अलंकारिक वर्णन का अर्थ नहीं समझ पाए तो इसमें गलती ने महात्मा बुद्ध की है ने महर्षि दयानन्द जी की। एनसीईआरटी ११वीं कक्षा, प्राचीन भारत, अध्याय १३ में लिखा है कि बुद्ध ब्राह्मणों की सभा में गए, क्षत्रियों की, वैश्यों की सभा में गए परन्तु कहीं ऐसा वर्णन नहीं मिलता कि बुद्ध शूद्रों की सभा में भी गए।

डॉ. रामचरण शर्मा व NCERT पुस्तक में वर्णन है कि बौद्धों ने शूद्रों की राजनीतिक और आर्थिक अशक्तताओं को दूर करने का कभी प्रयत्न नहीं किया। न हीं उन्होंने उस वर्ण व्यवस्था का खुलकर विरोध किया इसमें शूद्रों को सेवी वर्ग में रखा जाता था।

बाबू जगजीवन राम के अनुसार जब अछूत अपनी ही जाति में छुआछूत मानते हैं तो ब्राह्मणों को कोसने से क्या लाभ? वो आगे लिखते हैं इसके लिए हम मनुस्मृति को दोष नहीं दे सकते, क्योंकि आधुनिक समाज इस स्थिति में नहीं है कि वह मनुस्मृति के नियमों का मूल्यांकन कर सके। शूद्र शब्द का प्रचलित अर्थ ऋग्वैदिककालीन नहीं है। यदि वह घृणास्पद होता तो मृच्छकटिक का लेखक शूद्रक अपना नाम जरूर बदल देता तथा शूद्र होते हुए भी नंदवंशी राजा कई पीढीयों तक मगध पर

राज्य नहीं कर सकते थे । वज्र सूची में श्रृंगी, कौशिक, गौतम, वाल्मीकि, व्यास, पाराशर, वशिष्ठ, विश्वामित्र, मांडव्य, मातंग, भारद्वाज , नारद आदि अब्राह्मणों की गिनती वैदिक ऋषियों में की गई जिससे गुण कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था की महानता का पता चलता है ।

परन्तु लेखक महोदय दूसरी तरफ बौद्ध ग्रन्थ ललितविस्तर में बोधिसत्व के जन्म स्थान के बारे में देवपुत्र कौशल व मगध कुल को नीच व अशुद्ध होने से अयोग्य बताते हैं। धम्मपद अट्ठकथा में आई विडूडभ की कथा से प्रमाणित है कि शाक्य कुल उच्च नीचवाद को मानता था। बौद्ध ग्रन्थों में वर्णशंकरों को हीन जाति या हीनशिल्प कहा गया है। इसमें चमार, चटाई बनाने वाले, जुलाहे, कुम्हार आदि थे (देखें चतुरसेन शास्त्री की पुस्तक 'बुद्ध और बौद्ध धर्म')।

हिंदुइज्म को कलंक समझने वाले लेखक महोदय, भदंत आनन्द कौशल्यायन अपनी पुस्तक 'तथागत' के पृष्ठ छह पर कहते हैं कि बुद्ध के बारे में बौद्धों का पहला विश्वास यह है कि बुद्ध मध्य मण्डल में ही पैदा होते हैं अर्थात् कंकझोल, संथाल परगना, बिहार, सिलाई नदी, हजारीबाग, मेदिनीपुर, थानेसर कर्नाल जिला, उसीरध्वज आदि में तथा बुद्ध क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ण में ही पैदा होते हैं यानी वैश्य और शूद्र बुद्धत्व को प्राप्त नहीं कर सकते।

बौद्ध मत का ध्येय "बहुजन सुखाय बहुजन हिताय" नहीं होकर "स्वयं सुखाय स्वयं हिताय" ही है, यह भदंत आनंद कौशल्यायन की पुस्तक तथागत के पृष्ठ ४१ से प्रमाणित है। वहां लिखा है, कल्पना कीजिए जो जलते हुए शहर में खुद भाग निकला है किंतु उसका इतना सामर्थ्य नहीं की किसी दूसरे को बचा सके उसके लिए बड़ी बात है कि उसने अपने भाग निकलने के लिए अपना रास्ता सही रास्ता ढूंढ़ निकाला है ऐसे व्यक्ति को क्या कहेंगे बुद्ध।

बुद्ध के समय में भी वैदिक वर्ण व्यवस्था के प्रमाण मौजूद थे जैसा कि बुद्ध आश्वलायन संवाद (पृष्ठ ४४ पुस्तक तथागत) से स्पष्ट है कि यवन और काम्बोज में आर्यावर्त व दास दो ही वर्ण थे तथा आर्य दास बन सकते थे और दास आर्य।

महामन्त्री आर्यवीर दल हरियाणा प्रान्त

मुक्त पुरुषों को 'युगपत्' ज्ञान होता है

जिसे 'धनञ्जय' वायु का ज्ञान हुआ है और जिसकी आत्मा उसमें सञ्चार कर सकती है और जिनके आत्मा से पूर्वजन्म संस्कार निकल चुके हैं वह और जिसके आत्मा में स्थायी शान्ति उत्पन्न हुई है, जिसके आत्मा को अत्यन्त पवित्रता, स्थिरता, ज्ञानोन्नति की पहचान हो चुकी है और जिसकी दृष्टि को और मनोवृत्ति को ज्ञान सुख के बिना अन्य सुख विदित नहीं है, ऐसे योगी को परमानन्द प्राप्त होता है। ऐसे मुक्त पुरुषों को देश, काल, वस्तु परिच्छेद का 'युगपत्' ज्ञान होता है, उन्हें 'युगपत्' ज्ञान का अटक नहीं है। जैसे एक कण शक्कर चींटी को मिले तो वह उसे ले जाना चाहती है; परन्तु उसे एक शक्कर का गोला मिल जाये तो उसी शक्कर के गोले को वहीं पर चाट लिपट जाती है; इसी तरह योगियों की आत्मा की स्थिति परमानन्द प्राप्त होने पर होती है।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती (पूना प्रवचन)

वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

(संस्कृत दिवस विशेष)

संस्कृत में भारत और भारत में संस्कृत

डॉ. आशुतोष पारीक

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः।।
(मनुस्मृति २.२०)

इस श्लोक में महर्षि मनु का स्पष्ट अभिमत है कि स्वयं को जानो और सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित करो। स्वयं प्रकाशित होने के लिए आवश्यक है अपने शास्त्रों की ओर प्रवृत्त होना और शास्त्रों की ओर प्रवृत्ति का मार्ग खुलता है संस्कृत से। किसी ने सच ही कहा है -

''अपने पैदा किए सूरज से उजाला माँगो।
दूसरे की रोशनी का भरोसा क्या?''

भारतीय ज्ञान परम्परा का केन्द्रीय तत्त्व है संस्कृत

भारत के अनुपम गौरव की आधारशिला, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की आगार-स्वरूपा संस्कृत भाषा आज भी भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को सहेजे हुए है और यही कारण है कि यह आज भी उतनी ही उपादेय है, जितनी प्राचीन काल में रही थी। आर्यसमाज के संस्थापक और पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और 'वेदों की ओर लौटो' के सूत्र में संस्कृत की महत्ता के बीज विद्यमान हैं। भारत के आध्यात्मिक, सामाजिक एवं धार्मिक चिन्तकों ने सदैव संस्कृत को भारत की आत्मा कहा है। जीवन के आरम्भिक वर्षों में विदेशी जीवन जीने के बावजूद महर्षि अरविन्द आध्यात्मिक उन्नति के लिए संस्कृत की ओर अग्रसर हुए। ऐसे अनेक महापुरुष भारत और विश्व की धरा पर हुए हैं जो संस्कृत भाषा के माध्यम से ही आत्मबोध के मार्ग की ओर उन्मुख हुए। भारत की धरा पर संस्कृत न हो तो भारत का अधूरापन खलता रहेगा और यही कारण है कि नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में संस्कृत की आवश्यकता को समझा गया और इसके ड्राफ्ट में संस्कृत शब्द का कुल २३ बार प्रयोग किया गया है। अत: स्पष्ट है कि आने वाले युग में संस्कृत की महत्ता के संवर्धन का पुरजोर प्रयास किया जाएगा।

संस्कृत जिसे देववाणी और गीर्वाणभारती भी कहा जाता है, वह भारत में सुदीर्घकाल तक सामाजिक व्यवहार की भाषा रही है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि विश्व की प्राचीनतम भाषा के रूप में प्रतिष्ठित, वैज्ञानिक, तार्किक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चिन्तन की अनुपम धारा को प्रवाहित करने वाली संस्कृत भाषा को आज के युग में यथोचित स्थान नहीं मिल पाया है। 'संस्कृत दिवस' हमें आत्ममन्थन के साथ ही संस्कृत से जुड़ने और अन्यों को जोड़ने का अवसर देता है।

संस्कृत दिवस कब से और क्यों मनाया जाता है?

प्राचीन भारत में श्रावण पूर्णिमा के दिन से शिक्षण सत्र का आरम्भ होता था। उपनयन संस्कार के द्वारा गुरु के समीप जाकर विद्याध्ययन आरम्भ किया जाता था। श्रावण पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा तक गुरुकुलों में अध्ययन-अध्यापन किया जाता था। प्राचीन भारत में श्रावण पूर्णिमा की इसी महत्ता को देखते हुए वर्ष १९६९ में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के आदेश से केन्द्र तथा राज्य स्तर पर संस्कृत दिवस मनाने का निर्देश जारी किया गया और अब इसे 'विश्व संस्कृत दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत के प्रचार-प्रसारार्थ अनेक आयोजन किए जाते हैं। संस्कृत जन-जन की भाषा बने, संस्कृत के माध्यम से भारतीय संस्कृति का विस्तार हो और संस्कृत से समर्थ भारत का निर्माण

हो; ऐसे ही लक्ष्यों को तय करने और उनकी प्राप्ति के लिए अभिनव मार्गों और उपायों की ओर उन्मुख होने के लिए तैयार करता है संस्कृत दिवस।

आधुनिक युग में संस्कृत क्यों आवश्यक है?

संस्कृत की महत्ता को प्राय: हर बुद्धिजीवी स्वीकार करता है। जीवन में आजीविका के लिए अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए कहीं न कहीं संस्कृत की उपयोगिता को स्वीकार कर ही लिया जाता है। परिवर्तन संसार का नियम है। अत: युग के बदलाव के साथ-साथ मनुष्य की सोच, आवश्यकता और जीवन शैली में बदलाव आना स्वाभाविक है। किन्तु इस बदलाव में भी स्वाभाविकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है नवाचारों में आत्मबोध का प्रकाश। नवाचार हमें नया बनाते हैं, नवजीवन की धारा से जोड़ते हैं लेकिन यदि ये नवाचार आत्मतत्त्व से अलग हो गए तो ये नवाचार अनुपयोगी, क्षणिक एवं मिथ्या हो जाएँगे। अत: आत्मिक चिन्तन बना रहे, इसके लिए आध्यात्मिक अवबोध की ऋषि परम्परा से जुड़े रहना अनिवार्य हो जाता है और इसी ऋषि परम्परा से जुड़ने का सरल और सहज द्वार है संस्कृत। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, दर्शन, स्मृति ग्रन्थों के अतिरिक्त विविध शिल्प, कला और विज्ञान का विशाल संस्कृत साहित्य आर्ष चिन्तन से जुड़कर युगानुसार परिवर्तन की योग्यता प्रदान करता है। संस्कृत प्राचीन काल की भाषा ही नहीं है, अपितु प्राचीन काल से जोड़ने वाली भाषा भी है। भारत का प्राचीन वैभव, उन्नत ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिक बोध आज भी चकित करने वाला है। संस्कृत की धारा में प्रवाहित होना निश्चय ही आनन्ददायी और परम लक्ष्य की सिद्धि कराने वाला है। अत: संस्कृत से जुड़िए, संस्कृत बोलिए, संस्कृत को अपने हृदय में धारण कीजिए। आप संस्कृत से आजीविका पाना चाहें तो उसके भी अनेक मार्ग उपलब्ध हैं और जीवन के सत्य को समझना चाहें तो संस्कृत उसकी भी राह सुझाती है।

आधुनिक काल में संस्कृत को जानने के विविध उपाय

आज संस्कृत पढ़ना-पढ़ाना और सीखना अत्यन्त सरल हो गया है। आप डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से प्राचीन संस्कृत शास्त्रों को नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न एप्लीकेशन्स (एंड्रॉयड/आईओएस), वेबसाइट्स, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र एवं दूरस्थ शिक्षा आदि के द्वारा संस्कृत से जुड़ने के अनन्त अवसर प्राप्त हो जाते हैं। संस्कृत प्राय: सभी तकनीकों से आप तक पहुँच रही है। गूगल ट्रांसलेटर के द्वारा किसी भी भाषा से संस्कृत में अनुवाद कर लेना बिल्कुल सरल हो गया है। निश्चित रूप से इन सभी उपायों को और बेहतर बनाया जाता रहेगा। लेकिन यह भी सच है कि संस्कृत सीखने के पर्याप्त अवसर आज उपलब्ध हैं और इनका अधिक से अधिक उपयोग किया जाए, जिससे इनमें समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार परिर्वतन किया जाता रहे। अत: संस्कृत में बहुत कुछ हो रहा है, बस आवश्यकता है उसे अपनाने की और जीवन में धारण करने की।

मम भाषा संस्कृतभाषा

संस्कृत ज्ञान-विज्ञान और व्यवहार की भाषा है। अत: संस्कृत से जुड़ने के लिए संस्कृत को अपना बनाना होगा। संस्कृत के प्रति ममत्व रखना होगा। आज के युग में हम संस्कृत से क्या नहीं पा सकते हैं? बस संस्कृत को आत्मगौरव की भाषा बनाने और उसी के अनुरूप आगे बढ़ने का प्रयत्न करने की आवश्यकता है। यदि भारत के गौरव को पुन: प्राप्त करना है तो सबसे पहले वर्षों की गुलामी की मानसिकता से बाहर निकलना होगा। संस्कृत हमें स्वयं को जानने और दूसरों को मानने का अतुल्य साहस देती है। अत: सर्वप्रथम संस्कृत को हृदय में धारण करना होगा, संस्कृत के माध्यम से जीवन में प्रगति के मार्गों पर चलना सीखना होगा। इसी ममत्व से प्राचीन ग्रन्थों का संरक्षण, पोषण और संवर्धन होगा और हम

एक भारतीय के रूप में अपने आदर्शों के द्वारा सच्चे विकास की ओर अग्रसर हो सकेंगे। सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत की महत्ता को स्वीकार किया जाता है। अब बारी है कि प्रत्येक भारतीय भी संस्कृत में स्वत्व का और स्व में संस्कृत का दर्शन, मनन और निदिध्यासन करे।

भारत की आत्मा संस्कृत में बसती है। संस्कृत में सर्वाधिक कार्य भारत में ही हुआ है। अतः संस्कृत में भारत और भारत में संस्कृत को सरलता से देखा जा सकता है, अतः कहा गया है - "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे, संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।।" अर्थात् भारत की दो प्रतिष्ठाएँ हैं- संस्कृत भाषा और भारतीय सांस्कृतिक निधि। तो आइए इसी संस्कृत और संस्कृति की प्रतिष्ठा को आत्मसात् करें और संस्कृत के लिए दृढ इच्छा को जाग्रत करें, संस्कृत के अभ्यास से उसे हृदय की भाषा बनाएँ और संस्कृत के आनन्द युक्त ज्ञान-विज्ञान का उत्तरोत्तर संवर्धन करें।

वदतु संस्कृतम्। जयतु भारतम्।।

सह आचार्य, संस्कृत विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय
महाविद्यालय, अजमेर

महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित दुकान (स्टॉल) आवंटन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १८, १९ व २० अक्टूबर (शुक्रवार, शनिवार व रविवार) २०२४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्यजगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की दुकान लगती हैं। इस वर्ष से स्टॉल किराया २०००=०० रूपये प्रति स्टॉल किया गया है। खुले में या अपनी इच्छानुसार स्टॅाल लगाना निषिद्ध रहेगा। आप अपना पूर्ण सहयोग देकर इस कार्य में सहयोग करावें। जिन महानुभावों की पहले राशि जमा होगी उस क्रम से स्टॉल का निर्धारण होगा। ऋषि मेला-२०२४ हेतु दुकान (स्टॉल) आवंटन में तीन आधार रहेंगे- १- आर्य धार्मिक पुस्तक, २- हवन सामग्री, ओ३म् ध्वज आदि, ३- दवाईयाँ। आपको जितनी स्टॉल की आश्यकता है उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट या नगद या ऑनलाइन जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक को राशि की रसीद दिखाकर स्टॉल संख्या प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित की जायेगी। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोट**:- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

सम्पर्क-देवमुनि/भूदेव उपाध्याय-७७४२२२९३२७

ज्ञानसूक्त - १७

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्या

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद १०/७१ 'ज्ञानसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।
-सम्पादक

उत त्वं सख्ये स्थिर पीतमाहुर्नैनम् हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाम् अफलामपुष्पाम्।।

हम ज्ञानसूक्त की चर्चा कर रहे हैं। ज्ञान सूक्त ऋग्वेद के १०वें मण्डल का ७१वाँ सूक्त है। इसका ऋषि बृहस्पति है और इसका देवता ज्ञान है। हमने पिछला मन्त्र देखा **उत त्वं सख्ये...अफलामपुष्पाम्**। हमने इसमें देखा था कि पढ़ने वाले लोगों में से, एक गुरु के शिष्यों में से उनमें से सब पढ़ते हुए भी, एक विशेषण यहाँ दिया 'स्थिर पीत' अर्थात् जो उन्होंने पिया है, जो उन्होंने जाना है पढ़ा है, वो उनका अपना बना है, उनके अन्दर स्थिर हुआ है। उस ज्ञान को उन्होंने आत्मसात किया है। इसलिए वो उनमें से कुछ या कोई एक उस ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ ग्राहक बन जाता है। उसकी जो पहचान है, कसौटी है वो है- नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु। जो ज्ञान है, उसका वो स्वामी है इसलिए यहाँ पर ऐसे व्यक्ति 'वाजिनेषु' ऐसा कहा है तो 'वाज' का अर्थ ज्ञान भी होता है, अन्न भी होता है, धन भी होता है, क्योंकि प्रसंग ज्ञान का चल रहा है इसलिए यहाँ पर वाजिनेषु का अर्थ है 'वाक् संग्रामे', क्योंकि हमारा बल एक तो होता है शारीरिक बल, जो पाश्विक है। यह ऐसा उपाय है जो बहुत असभ्य है। इसका एक-दूसरे पर जो घातक परिणाम है वो शारीरिक चोट, आघात के रूप में हम को दिखाई देता है। लेकिन जो वाणी का संग्राम है, यह बुद्धिमानों का है, बुद्धिजीवियों का है और इसी से कोई व्यक्ति विजयी और कोई व्यक्ति पराजित होता है। कोई व्यक्ति सदाचार और सन्मार्ग और अध्यात्म का पथिक बनता है। कोई व्यक्ति इसी से सांसारिक व्यापरी बनता है। उसके अन्दर जो क्षमता है ज्ञान की, ग्रहण करने की उसके आधार पर वो अधिक समझदार, ज्ञानवान होता है, पहचानने वाला होता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को सभी चाहते हैं, उसे अपने साथ रखना चाहते हैं जो उनकी बात को अच्छी तरह से कह सकता है, जो उनके पक्ष को स्थापित कर सकता हे, दूसरे पक्ष के सामने वह प्रबल रह सकता है। इसलिए ऐसे व्यक्ति को दूसरे लोग पराजित नहीं कर सकते, ज्ञान में वे उसका पार नहीं पा सकते। यह मन्त्र की आधी बात उस व्यक्ति के लिए कही गयी जो ज्ञानवान बना है, जिसने ज्ञान को अपने अन्दर स्थिर किया है, संग्रहीत किया है, आत्मसात किया है।

मन्त्र का जो दूसरा भाग है वो कहता है- अधेन्वा चरति माययैषा वाचं शुश्रुवाम् अफलाम्पुष्पाम् कहा है कि एक व्यक्ति पढ़ तो रहा है लेकिन पढ़े हुए को वह समझ नहीं रहा है, आत्मसात नहीं कर रहा है, उसके अर्थ की गहराई तक नहीं जा रहा है। केवल शब्द मात्र को सुन रहा है। वो आँखों से केवल अक्षर पढ़ रहा है। उसके अन्दर जो तत्त्व ज्ञात है, रहस्य है उसको वह नहीं पकड़ पा रहा है। उसके लिए वाणी कैसी है, उसके लिए

मन्त्र में एक उपमा दी है। वैसे भी अन्यत्र साहित्य में, वेद में भी वाणी को गौ कहा है। ज्ञान को भी गऊ की उपमा दी गयी है और इसलिए ऐसी धेनु, ऐसी गाय, संस्कृत में 'धेनु' शब्द का अर्थ होता है, जो गाय दूध दे रही है अर्थात् जिसका हमें लाभ मिल रहा है। तो मन्त्र कहता है- अधेन्वा चरति माययैषा। जो व्यक्ति पढ़ा तो है पर समझा नहीं है, जिसने जाना नहीं है आत्मसात नहीं किया है। वो ऐसा ही है जैसे एक गाय, गाय तो दिखती है लेकिन गाय होती नहीं है। जैसे चित्र की गाय को गाय तो कहते हैं लेकिन गाय के लाभ तो उससे प्राप्त नहीं किए जा सकते। ऐसी ही कोई गाय यदि वस्तु की, लकड़ी की, पत्थर की बनाकर रख दी जाए, तो वह गाय भी तो किसी काम नहीं आती। कोई यह नहीं कह सकता कि इससे मुझे दूध की प्राप्ति होगी। वह गाय तो है, लेकिन माया की है। माया का अभिप्राय होता है, जो वास्तविकता को छिपा दे, और हमें भ्रम पैदा कर दे होने का, परन्तु हो नहीं। तो वेद का मन्त्र कह रहा है- अधेन्वा मायया एष चरति। यह समझता तो है कि मैं ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ, जान रहा हूँ, लेकिन उसे उससे प्राप्त कुछ भी नहीं हो रहा है। आँख से देखकर पढ़ नहीं रहा है, कान से सुनकर समझ नहीं रहा है। इसलिए कहा- एष अधेन्वा मायया चरति। बस चल रहा है, विचरण कर रहा है, कैसे कर रहा है- अधेन्वा मायया। इसके लिए शास्त्र ने पीछे भी एक बात कही है। जैसे कोई व्यक्ति पुस्तक को बहुत अच्छी अपने ऊपर रखे हुए है और उसको समझता नहीं है। उसके लिए एक उपमा यास्क ने दी- यथा खरश्च चन्दन भारवाही, भारस्य वेत्ता, न तु चन्दनस्य तथा शास्त्रात् अधीत्य खरवत् वहन्ति। और वे शास्त्र को मानो खरवत् वहन्ति। वे सारे शास्त्र को वैसे ही ढो रहे हैं जैसे कोई व्यक्ति गधे पर चन्दन लाद दे और जैसे गधे को चन्दन की गन्ध नहीं आत, उसका ध्यान चन्दन की गन्ध पर नहीं होता, उसका ध्यान तो वजन पर, भार पर होता है। उसे तो भार सताता है, चन्दन के गुण उसे पता नहीं लगते। तो शास्त्र को पढ़कर भी मनुष्य शास्त्र को वैसे ही ढो रहा है, जैसे कोई गधे पर चन्दन लदा हुआ है और वह एक बोझ समझ कर उसे ढो रहा है। तो यहाँ मन्त्र में भी वाणी को उसने प्राप्त तो किया है, ज्ञान को उसने ग्रहण किया है लेकिन नाम मात्र के लिए किया है। तो मन्त्र ने कहा- अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाम् अफलाम्पुष्पाम्। अर्थात् कोई पौधा आप लगाये और उस पौधे में न तो फल आए न फूल आए तो ऐसे आपको निराशा होने लगती है कि यह पौधा तो व्यर्थ चला गया, इसका हमें कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि कोई भी प्रयास हमें तब अच्छा लगता है, तब सार्थक लगता है जब हम जिस प्रयोजन के लिए उसे करते हैं, उसको लेकर चलते हैं, यदि हमारा वह उद्देश्य सफल होता है तो हमें प्रसन्नता होती है कि हमको फल प्राप्त हुआ। लेकिन जो व्यक्ति ज्ञान का उपयोग नही कर सकता वो ऐसा ही जैसे उसने कोई वृक्ष लगाया लेकिन उसे परिणाम नहीं मिला, उसका कोई फल नहीं आया। इसलिए इस संसार में वो सारे पदार्थ व्यर्थ हैं जो चित्र की तरह हमें मिलते हैं, लेकिन उनका कोई वास्तविक उपयोग हम नहीं कर सकते। इसलिए ज्ञान की जो महत्ता बताई इस मन्त्र में, उसे दो भागों में बाँटा।

पहला भाग तो हमारे ज्ञान का, हमारे परिवेश में क्या महत्त्व है। तो पहली पंक्ति जो वेद ने कही कि ज्ञान से समाज में साथियों में प्रतिष्ठा होती है। हम उनके लिए उपयोगी होते हैं और उसमें हमारी विजय होती है। ज्ञान का एक पक्ष है कि समाज में अपनी रक्षा करना, अपने पक्ष को सिद्ध करना, अपने पक्ष को प्रबल रखना, यह एक ज्ञान का परिणाम है।

मन्त्र के दूसरे भाग में जो बात कहता है कि ज्ञान का हमने यत्न तो किया, हमने उस पर समय लगाया, उसको पढ़ा, उसको सुना। लेकिन ज्ञान की जो वास्तविक लाभ या प्राप्ति होनी चाहिए थी वह यदि नहीं हुई तो हमारे लिए वह व्यर्थ हो जाता है। हम गाय की मूर्ति बनाकर

रखें और दूध की आशा करें, जो कि कभी पूरी होने में नहीं आएगी। वैसे ही लोग ज्ञानी बनने का यत्न करते हैं, पढ़-सुन भी लेते हैं लेकिन उसका उन्हें कोई उपयोग नहीं होता। उनका ज्ञान आत्मसात नहीं होता। इसलिए शास्त्र ने यहाँ समझाया कि यह ज्ञान हमारे अपने लिए भी उपयोगी है और उसके साथ-साथ जिस परिवेश में, साथियों में हम रहते हैं उनमें हमारी प्रतिष्ठा को भी बढ़ाता है। इसके लिए संस्कृत में एक बड़ी सुन्दर पंक्ति है- जो पूजा है, जो सत्कार है- स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्ववान् सर्वत्र पूज्यते। जो विद्या है सब स्थानों पर लाभदायक होती है, पूजनीय , सम्मानीय होती है और एक उपमा दी है कि देश में, समाज में सबसे बड़ा राजा को समझा जाता है, लेकिन उस राजा के सम्मान की भी एक सीमा है। वो एक विशेष वर्ग समुदाय विशेष क्षेत्र के लोगों में ही सम्मानीय होता है, अतः कहा स्वदेशे पूज्यते राजा। राजा केवल अपने स्थान, राज्य, देश में ही पूजनीय है। लेकिन जहाँ तक विद्वत्ता का, जानने का प्रश्न है, तो कहा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। विद्वान् सब जगह आदर को पाता है। इसलिए वेद कहता है कि उस ज्ञान के लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए और उस ज्ञान को पाने से हम दूसरे का भी भला कर सकते हैं और अपना भी भला कर सकते हैं। हमको वास्तव में मनुष्य बनाने का जो मुख्य आधार है वो मनुष्य का ज्ञानवान् होना है। वो पशु से केवल एक ही अर्थ में अलग है कि वह विवेक रखता है, वो समझ रखता है, वो जान सकता है पशु विवेक नहीं रखता, वह सींगो से लड़ता है, नखो से किसी को कष्ट पहुँचाता है, लेकिन एक मनुष्य को कुछ भी ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने ज्ञान से, अपने बुद्धि बल से, अपनी वाणी से वह इस तरह अपनी बात को कहता, रखता है कि उसी की बात से जय और पराजय, स्वीकृति-अस्वीकृति, हानि-लाभ सब शब्दों से ही हो जाता है। इसलिए मनुष्य को ज्ञानवान् होना चाहिए और वो ज्ञान प्राप्त करने से मनुष्य अपने परिवेश में भी और संसार में भी लाभ प्राप्त कर सकता है।

*** निवेदन ***

कीर्तिशेष आचार्य धर्मवीर जी ने अपने दानदाताओं के सहयोग से ऋषि उद्यान में निरन्तर चलने वाले ऋषि लंगर की व्यवस्था की थी, जो सतत संचालित हो रही है। इसमें ऋषि उद्यान की वृहद् भोजनशाला में **ऋषि उद्यान में निवास करने वाले योगसाधकों, संन्यासियों-वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों व आचार्यों के भोजन, दुग्ध, फल इत्यादि की व्यवस्था की जाती है।**

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों, विद्वानों, दर्शनार्थियों इत्यादि के निवास तथा भोजनादि की व्यवस्था इसके अन्तर्गत संचालित की जाती है।

आर्य दानदाता-परिवारों के सहयोग से ही यह अतिथि-यज्ञ सम्भव हो पा रहा है। अतः हम सभी आर्य परिवारों का दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि हम इस यज्ञ में होता बनकर निरन्तर दान-रूपी आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। विभिन्न संस्कारों एवं अन्य शुभावसरों पर अपनी दान-रूपी आहुति देना न भूलें, ताकि यह लोकोपकारी अतिथि यज्ञ निरन्तर चलता रहे।

इस अतिथि यज्ञ हेतु आप **५१००/-(पाँच हजार एक सौ रुपये) प्रतिवर्ष** भेजकर अपना सहयोग प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

ओम्मुनि
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री

परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में

भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला समारोह

कार्तिक कृष्ण १ से तृतीया सम्वत् २०८१ तदनुसार १८, १९, २० अक्टूबर २०२४

विराट् व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा, अजमेर एक भव्य एवं दिव्य समारोह का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर कई सम्मेलनों (यथा गोरक्षा सम्मेलन, वेद प्रचार सम्मेलन, सोशल मीडिया और आर्यसमाज, स्त्री शिक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन) का आयोजन होगा।

कार्यक्रम स्थल- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- का आरम्भ सोमवार १४ अक्टूबर से होगा व इसकी पूर्णाहुति समापन समारोह के अन्तिम दिन २० अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री अहमदाबाद होंगे।

विशेष आकर्षण

१. इच्छुक व्यक्तियों को वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा।
२. ऋषि के जीवन के ऊपर लेज़र शो।
३. ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रदर्शनियाँ।
४. संगठन का परिचय देने के लिए एक विशाल शोभा यात्रा।
५. वेद-कण्ठस्थीकरण की परीक्षा।
६. ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष गोष्ठियाँ, नाटिकायें।
७. आर्य साहित्य एवं यज्ञादि के उपकरणों का विक्रय।
८. कार्यकर्त्ताओं तथा विद्वानों का सम्मान।

ऋषि लंगर- इस अवसर पर पधारने वाले श्रद्धालुओं के लिए पौष्टिक एवं स्वादिष्ट प्रात:राश तथा दोनों समय के भोजन की व्यवस्था परोपकारिणी सभा की ओर से होगी।

आवास-व्यवस्था- आप यदि समूह में रहना चाहेंगे तो ऋषि उद्यान तथा इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्यालयों, आर्यसमाजों एवं धर्मशालाओं में व्यवस्था की जायेगी। यदि आप अपने लिए अलग से कमरों की व्यवस्था करना चाहते हैं तो निम्न दूरभाषों पर कम से कम १५ दिन पूर्व सूचना दे दें ताकि होटलों में व्यवस्था की जा सके। आप अपने आने के लिए निम्नलिखित दूरभाष पर रजिस्ट्रेशन अवश्य करा लें ताकि आपके आवास में कोई कठिनाई न हो।

सम्पर्क सूत्र - १. श्री रमेशचन्द भाट - 9413356728, २. श्री दिवाकर गुप्ता - 7878303382

आप से निवेदन है कि आप इस अवसर पर अवश्य पधारें। ऐसा अवसर आप के जीवन में दूसरी बार नहीं आयेगा तथा सभी जन अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधारकर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें। महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा व उत्साह प्राप्त कर वेद धर्म के प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

इस महान् पर्व पर आर्यजगत् के अनेक प्रसिद्ध संन्यासी, मुनि, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक एवं राजनैतिक जगत् के कई महानुभाव पधार रहे हैं।

संन्यासी- १. स्वामी रामदेव जी, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार २. स्वामी प्रणवानन्द, गुरुकुल गौतमनगर, देहली ३. स्वामी डॉ. देवव्रत, संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल ४. स्वामी ब्रह्ममुनि, महाराष्ट्र ५. स्वामी ऋतस्पति, गुरुकुल होशंगाबाद ६. स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक ७. स्वामी चिदानन्द सरस्वती, गुरुकुल निगम नीडम्, तेलंगाना ८. स्वामी विदेह योगी, कुरुक्षेत्र ९. स्वामी सच्चिदानन्द, राजस्थान १०. आचार्य विजयपाल, गुरुकुल झज्जर ११. आचार्य ऋषिपाल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ।

आमन्त्रित राजनैतिक व्यक्तित्व- १. आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात राज्य २. श्री भजनलाल शर्मा, मुख्यमन्त्री राजस्थान ३. श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय संस्कृति मन्त्री ४. श्री वासुदेव देवनानी जी, अध्यक्ष विधानसभा राजस्थान ५. श्री घनश्याम तिवारी, राज्यसभा सांसद ६. श्रीमती अनिता भदेल, विधायक एवं पूर्व मन्त्री, अजमेर।

विद्वान् एवं विदुषी- १. प्रो. कमलेश शास्त्री, अहमदाबाद २. प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब ३. डॉ. रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली ४. डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, उ.प्र. ५. डॉ. रामप्रकाश वर्णी, एटा ६. डॉ. महेश विद्यालंकार, दिल्ली ७. पद्मश्री आचार्य सुकामा, हरियाणा ८. डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, गुरुकुल शिवगंज ९. डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती, नजीबाबाद १०. डॉ. धारणा याज्ञिकी, गुरुकुल शाहजहाँपुर ११. प्रो. नरेश कुमार धीमान, अजमेर १२. आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, बिजनौर १३. डॉ. विनय विद्यालंकार, उत्तराखण्ड १४. आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद १५. डॉ. कुलबीर छिकारा, सूचना आयुक्त, हरियाणा १६. डॉ. जगदेव विद्यालंकार, रोहतक १७. आचार्य जीववर्धन शास्त्री, जयपुर १८. डॉ. रामचन्द्र, कुरुक्षेत्र १९. आचार्य अंकित प्रभाकर, अजमेर।

आर्यनेता- श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा २. श्री प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ३. श्री राजीव गुलाटी, चेयरमैन एम.डी.एच. ४. ठाकुर विक्रमसिंह, अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी ५. श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ६. श्री विनय आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली ७. श्री देवेन्द्रपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ८. श्री किशनलाल गहलोत, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ९. डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, प्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर १०. श्री जितेन्द्र भाटिया, आर्यवीरदल दिल्ली ११. श्री देशबन्धु आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा १२. श्री सतीश चड्ढा, महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा देहली १३. श्री योगेश मुंजाल, प्रधान टंकारा स्मारक ट्रस्ट १४. श्री अजय सहगल, मन्त्री टंकारा स्मारक ट्रस्ट।

भजनोपदेशक - श्री दिनेश पथिक (पंजाब), श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य

सम्पूर्ण कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष के रूप में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे. बी. एम. ग्रुप उपस्थित रहेंगे।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप आयकर मुक्त होगा। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। सहयोग हेतु निम्न खातों का प्रयोग करें। ऋषि लंगर हेतु आटा, चावल, दाल, चीनी, घी, तेल आदि सामग्री भी प्रदान कर सकते हैं।

खाताधारक का नाम : परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINISABHA AJMER)

बैंक का नाम : भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर, बैंक बचत खाता संख्या : 10158172715

IFSC - SBIN0031588 UPI ID : PROPKARNI@SBI

निवेदक - ओम्मुनि वानप्रस्थी (प्रधान) कन्हैयालाल आर्य (मन्त्री)

yono SBI | SBI Payments

MERCHANT NAME : PROPKARNI SABHA
UPI ID : PROPKARNI@SBI

SCAN & PAY

BHIM
SBI Pay
BHIM UPI

डॉ. सुरेन्द्र कुमार- संरक्षक, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, डॉ. वेदपाल-संरक्षक एवं सम्पादक परोपकारी, श्री सज्जनसिंह कोठारी, सभा उपप्रधान, जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त, सभा उपप्रधान, श्री जयसिंह गहलोत, सभा उपप्रधान, जोधपुर, डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा, सभा संयुक्त मन्त्री, अजमेर, श्री लक्ष्मण जिज्ञासु, सभा कोषाध्यक्ष, नोयडा, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, पुस्तकाध्यक्ष, गुरुकुल झज्जर, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, अन्तरंग सदस्य, कुरुक्षेत्र, श्री वीरेन्द्र आर्य, अन्तरंग सदस्य, अजमेर।

अन्य ट्रस्टीगण- श्री शत्रुघ्न आर्य, श्री सुभाष नवाल, मुनि सत्यजित्, स्वामी विष्वङ् परिव्राजक, श्री विजयसिंह भाटी, श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर, डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डॉ. योगानन्द शास्त्री, श्री सत्यानन्द आर्य।

आयोजक- परोपकारिणी सभा, अजमेर

(महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था)

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज.

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है।

दूरभाष - **8890316961**

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से ३१ मई २०२४ तक)

१. श्रीमती चन्द्रकान्ता माहेश्वरी, अजमेर २. श्री महेन्द्र कामदार, किशनगढ़ ३. श्री सीताराम बंसल, किशनगढ़ ४. श्री रामपाल छीपा, किशनगढ़ ५. श्री भोजराज राठी, किशनगढ़ ६. श्रीमती सरोज मालू व श्री दिनेश मालू, अजमेर ७. श्री हरस्वरूप काबरा, किशनगढ़ ८. श्री आर्यसमाज बिक्रिच्यावास, अजमेर ९. श्री जयकिशन ईनाणी, बिक्रिच्यावास, अजमेर १०. श्री पन्नालाल गैना, जेठाना, अजमेर ११. श्री हरिकिशन प्रजापत, जेठाना, अजमेर १२. श्री विजय सिंह, जेठाना, अजमेर १३. श्री गोविन्द जनावा १४. श्री दुर्गालाल गंगवार १५. श्री हरिराम, जेठाना, अजमेर १६. श्री गोपाल, जेठाना, अजमेर १७. श्री रामनिवास, जेठाना, अजमेर १८. श्री रामप्रसाद, सराधना, अजमेर १९. श्री रामेश्वर लाल सोमानी, अजमेर २०. श्रीमती ज्ञानमती, प्रयागराज २१. श्रीमती इन्द्रा वासु सोनी, कडैल, अजमेर २२. श्री ओमप्रकाश जी मनीष बाहेती, अजमेर २३. श्री लक्ष्मीनारायण मालू, किशनगढ़ २४. श्री बालमुकुन्द छापरवाल, राजगढ़, अजमेर २५. श्री आदर्श त्यागी, अजमेर २६. श्री दिलीप त्यागी, अजमेर २७. श्री गोपाल यादव, अजमेर २८. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर २९. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ३०. श्री जय सिंह गहलोत, जोधपुर ३१. श्री वेदप्रकाश गुप्ता, हिंडौन ३२. श्री योगेन्द्रपाल गुप्ता, दीनानगर ३३. स्वामी मुमुक्षानन्द सरस्वती, अजमेर ३४. श्री किशन गर्ग, भोपाल २५. श्री सुनील, चरखी दादरी २६. श्रीमती सीमा दाधीच, अजमेर २७. श्री भैरव, मुंडवा २८. श्री गोपेश सोमानी, अजमेर २९. श्री गणपत लाल आर्य, सीकर ३०. श्री जयप्रकाश आर्य, झुन्झुनु ३१. श्रीमती वीणा त्यागी, नई दिल्ली ३२. श्री पी.ए. दिवाकर, अहिल्या नगर ३३. श्री सोमित्र बलदुआ, कोटा ३४. श्री जगदीश कुमार, गुरुग्राम ३५. मै. स्वास्तिकॉम चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ३६. श्री देवेन्द्र सिंह यादव, दिल्ली ३७. डॉ. आशुतोष पारीक, अजमेर ३८. श्री रामनिवास मीणा, अजमेर ३९. श्री नाथूलाल त्रिवेदी, अजमेर ४०. श्री ओमव्रत, भिनाय, अजमेर ४१. श्री प्रशान्त शर्मा, मोडासा ४२. श्री शम्भुलाल साहनी, मुम्बई ४३. श्री रामवीर चुघ, पंचकुला, ४४. श्री रतनसिंह यादव, रेवाड़ी ४५. इंजी. करण सिंह, मुजफ्फरनगर, ४६. श्री जय सिंह गहलोत, जोधपुर ४७. श्री विष्णुदत्त नवाल, अजमेर ४८. श्रीमती शारदा, अजमेर ४९. श्री रामचन्द्र सोमानी, अजमेर ५०. श्रीमती कृष्णा भाटिया, अजमेर ५०. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ५१. श्रीमती प्रीति व श्री विनय शर्मा, अजमेर ५२. श्री भागचन्द सोमानी, अजमेर ५३. श्री रतन लाल तापड़िया, अजमेर ५४. श्री भगवती प्रसाद काबरा, अजमेर ५५. श्री अनीश शर्मा, अजमेर ५६. श्री गोपीकृष्ण नवाल, अजमेर ५७. श्रीमती चम्पा देवी, अजमेर ५८. श्री वासुदेव आर्य व श्रीमती कुमुदिनी आर्या, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से ३१ मई २०२४ तक)

१. श्रीमती सरोज मालू व श्री दिनेश मालू, किशनगढ़ २. श्री दुर्गाशंकर गुप्ता, अजमेर ३. श्री सुरेशचन्द नवाल, अजमेर ४. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ५. श्रीमती रमा सुभाष नवाल, अजमेर ६. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ७. स्वामी मुमुक्षानन्द, अजमेर ८. श्री भगवानदास पालड़ीवाल, अजमेर ९. श्री ओम्मुनि, ब्यावर १०. श्री सुबोध बलदुआ, कोटा ११. श्री जुगलकिशोर, अजमेर १२. स्वामी भजनानन्द, पाली १३. श्री यश प्रताप, अजमेर १४. श्रीमती तुलिका साहू व श्री कृष्ण कुमार साहू १५. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १६. श्री महेन्द्र सिंह फरेरा व श्रीमती जमना लोकेश सिंह, अजमेर १७. श्रीमती पुष्पा सोमानी, अजमेर १८. श्रीमती वर्षा, अजमेर १९. श्री ओमप्रकाश, अजमेर २०. श्रीमती मिश्री देवी फरेरा, अजमेर २१. श्रीमती पुष्पा गोयल व श्री सुशील कुमार गोयल, अजमेर २२. श्री रामवीर चुघ, पंचकुला २३. श्री जुगलकिशोर पंत, अजमेर २४. श्रीमती भंवरी देवी, जयपुर २५. श्री श्यामप्रकाश सोमानी, अजमेर २६. श्री मुरलीधर राठी, अजमेर २७. श्रीमती चम्पा देवी, अजमेर २८. श्री बालमुकुन्द जी किशन नवाल, गुलाबपुरा २९. श्री पारीक बन्धु, अजमेर ३०. श्री चांदमल साहू, प्रतापगढ़ ३१. श्री मनन दायमा, अजमेर ३२. श्री हीरा लाल शर्मा, अजमेर ३३. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकुला ३४. श्री के.के. शर्मा, देहरादून २५. श्री सुमित सांवरिया, अजमेर।

अन्नदान हेतु सहयोग

१. श्री भागचन्द सोमानी, अजमेर २. श्री देवेन्द्र गुप्ता, किशनगढ़ ३. श्रीमती सरला गुप्ता, किशनगढ़ ४. श्री रामावतार मालू, किशनगढ़ ५. श्री रामसुख गेना, जेठाना ६. श्रीमती केसर देवी, जेठाना ७. श्री दुर्गालाल गंगवार, जेठाना८. श्री सावरा गुजर, जेठाना ९. श्रीमती सरला देवी आर्य, कडैल १०. श्री कल्याण, नसीराबाद ११. श्रीमती पुष्पा देवी झंवर, ब्यावर।

०१ से ३१ मई २०२४ तक अन्नदान

१२. श्रीमती आर्यश्री, भीलवाड़ा १३. श्रीमती राजसुमित्रा, अजमेर १४. श्री श्याम प्रकाश सोमानी, अजमेर १५. श्रीमती रामकिशनी देवी सोमानी, अजमेर १६. श्रीमती मधु माहेश्वरी/संजय माहेश्वरी, अजमेर, १७. डॉ. एन.एन. इनाणी, अजमेर १८. श्री दयानन्द वर्मा, गुलाबपुरा १९. श्री विष्णुप्रसाद पारीक, मलावदा २०. श्री सीताराम ताण्डी, नागौर।

दानदाता

(०१ से ३१ मई २०२४ तक)

१. श्री रामवीर चुघ, पंचकुला २. श्री चन्द्रसेन हरिसिंघानी, अहमदाबाद ३. श्री देवमुनि, अजमेर ४. श्री रमेश चन्द आर्य, दिल्ली ५. श्रीमती खुशबू कम्बोज ६. श्रीमती रमा मुंजाल, लुधियाना ७. स्वामी ओम देव, अजमेर ८. श्री सोहनलाल, यू.एस.ए. ९. श्री मनीष सोनी, गुरुग्राम १०. श्री विश्वनाथ चौरसिया, म.प्र. ११. श्री विपिन कुमार, दिल्ली १२. सुश्री अदिति कुमार, गुरुग्राम १३. श्रीमती नीतू कुमार, गुरुग्राम १४. श्री नाथू लाल त्रिवेदी, अजमेर १५. श्रीमती रामप्यारी त्रिवेदी, अजमेर १६. श्री बालमुकुन्द/श्री किशन नवाल, गुलाबपुरा १७. श्री सतीश राठी/श्रीमती राधा राठी, अजमेर १८. श्रीमती पुष्पा शर्मा, अजमेर १९. श्री सचिन शर्मा, गुरुग्राम २०. श्रीमती रेखा, गुरुग्राम २१. मा. शिवाय आहुजा, गुरुग्राम २२. श्री एस.पी. सिंह, नई दिल्ली २३. श्रीमती कान्ता मखीजा, गुरुग्राम २४. श्री सौजन्य गोयल, मुजफ्फरनगर २५. श्रीमती सायर कंवर, पाली २६. श्री जगदीश २७. श्री कमलेश तलवार, लखनऊ २८. श्री आशीष बडाया, दौसा २९. श्री प्रणव कुमार, ३०. श्रीमती शान्ता आर्या ३१. श्री सुभाष चन्द्र आर्य, राजगढ़ ३२. स्वामी मुमुक्षानन्द सरस्वती, अजमेर ३३. श्री जुगलकिशोर पंत, नसीराबाद, ३४. श्रीमती कृष्णा भाटिया, अजमेर ३५. श्री दुर्गाशंकर गुप्ता, अजमेर ३६. श्रीमती रमा सुभाष नवाल, अजमेर ३७. माहेश्वरी सेवा समिति, अजमेर।

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २११७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की २००वीं जन्म-जयंती शताब्दी समारोह से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालय समय प्रातः १० से सायं ५ बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

सम्पर्क -	रमेश चन्द्र आर्य	दिवाकर गुप्ता
	ऋषि उद्यान कार्यालय	परोपकारिणी सभा-कार्यालय
	0145-2948698	मोबाइल - 7878303382, 8890316961

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय स्थापित

वैदिक धर्म के प्रचार के उद्देश्य से परोपकारिणी सभा ने उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की है। इसके प्रेरणा स्रोत बने सभा के उप प्रधान श्री दीन दयाल जी गुप्ता। उनका कहना था कि हमारे उपदेशक गांवों तक नहीं पहुंच पा रहे। सभा को योग्य एवं युवा उपदेशकों की नई पीढ़ी तैयार करनी चाहिए। सभा ने इस चुनौती को स्वीकार किया है। हमें आशा ही पूर्ण विश्वास है कि आर्य जनों के सहयोग से हम यह काम करने में सफल होंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि जन्म शताब्दी समारोह को लेकर भीलवाड़ा के आर्य जनों में उत्साह

परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओम्मुनि, मंत्री श्री कन्हैयालाल आर्य और पुस्तकाध्यक्ष श्री विरजानन्द दैवकरणि ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि जन्म शताब्दी समारोह के सिलसिले में हाल में भीलवाड़ा का दौरा किया। इस मौके पर उन्होंने आर्य समाज भीलवाड़ा के साप्ताहिक सत्संग में भी भाग लिया। सभा प्रधान श्री ओम्मुनि ने सभी आर्य जनों से समारोह की तैयारी में तन-मन-धन से सहयोग देने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात प्रसन्नता जताई कि श्री विजय शर्मा जी के संरक्षण में भीलवाड़ा का आर्य समाज निरन्तर आगे बढ़ रहा है। श्री रतिराम जी शर्मा ने आर्य समाज रूपी यह पौधा लगाया था। ये आज वट वृक्ष बन गया है। भीलवाड़ा आर्य समाज के प्रधान श्री विजय शर्मा ने द्वि जन्म शताब्दी समारोह आयोजन के लिए पांच लाख रुपये की दान राशि देने की घोषणा की।

आचार्य विरजानन्द दैवकरणि जी का स्वागत करते भीलवाड़ा आर्य समाज के पदाधिकारी। मंच पर विराजमान परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री कन्हैयालाल आर्य, प्रधान श्री ओम्मुनि और भीलवाड़ा आर्य समाज के प्रधान श्री विजय शर्मा।

आर जे/ए जे/80/2024-2026 तक प्रेषण : ३०-३१ अगस्त २०२४ आर.एन.आई. ३९५९/५९

अनन्य ईश्वर भक्त, योगेश्वर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की

२००वीं जयन्ती के अवसर पर

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

दिव्य एवं भव्य

ऋषि मेला

१८-२० अक्टूबर २०२४

सादर आमन्त्रण

प्रेषकः

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकट